बच्चों की अख़्लाक़ी तरबियत के लिये
सबक़ आमोज़ कहानियों के साथ

चालीस हदीसें

मुअल्लिफ
मुहम्मद अफरोज़ कादरी चिरैयाकोटी
दल्लास यूनिवर सिटी केपटाउन साउथ अफ्रीका

नुमानी बुक डिपु
मछली मन्डी पान्डे कटरा, चिरैयाकोट, मउ उ.प्र. (इंडिया)

بسم الله الرحمن الرحيم

बच्चे अल्लाह तआला की अज़ीम नेमत और चमनिस्ताने हस्तीके रंग बिरंगे फूल हैं. उनके अख़्लाक़ फूल की पत्तियों की तरह नाजुक होते हैं. अच्छा अदब उनके लिये बादे बहार है जबकि फहश लेट्रेचर बादे खेज़ाँ. उनके अख़्लाको किरदार की तामीरो ततहीर के हवाले से एक मुंफरिद कोशिश.

बच्चों की अख़्लाक़ी तरबियत के लिये कहानियों के साथ

मुअल्लिफ

मुहम्मद अफरोज़ कादरी चिरैयाकोटी

दल्लास यूनिवर सिटी कैपटाउन साउथ अफ्रीका

तफसीलात

किताब : चालीस हदीसें

टॉपिक : बच्चों के अख़्लाको किरदार की हुस्ने तामीर

तालीफ : अबू रिफका मुहम्मद अफरोज़ कादरी चिरैयाकोटी

नज़रे सानी : हज़रत अल्लामा मुहम्मद अब्दुल मुबीन नुमानी क़ादरी

किताबत : अरशद क़ादरी घोस्वी

सफहात : 96

एशाअत : 2014

क़ीमत :

नाशिर : रिफाइ मिशन. नासिक

तक़्सीमे कार : **نعمانی بک ڈپو، چریاکوٹ، مئو، یوپی۔**

फेहरिस्त

बच्चों से दो बातें

अज़ीज़ बच्चो! पहले तुम यह ज़ेहन नशीं करलो कि दुनियाँ में वक़्त से ज़्यादा क़ीमती कोई चीज़ नहीं. बल्कि यह समझो कि वक़्त ही ज़िन्दगी है जिसने वक़्त की कदर नहीं की और उसे यूँही बरबाद करता रहा तो उसने गोया अपनी उम्रे अज़ीज को बेकार ज़ाए कर दिया.

तुम जानते हो कि अल्लाह तआला ने किसी चीज़ को बिला वजह पैदा नहीं किया तो फिर हम तो .अश्रफुल मख्लूकात. हैं वह भला हमें बिला मक़्सद क्यों पैदा करेगा. तो आओ क़ुरआन से पूछें कि हमारी पैदाइश का क्या मक़्सद है. अल्लाह तआला फरमाता है:

وَمَا خَلَقْتُ الجِنَّ وَالاِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

और मैंने जिन्नात और इनसान को सिर्फ अपनी इबादत के लिये पैदा किया है.

जब तुमहें अपनी पैदाइश का मक़्सद मालूम होगया तो तुमहें कभी भी अपने मक़्सद से गाफिल और बे नेयाज़ नहीं होना चाहिये. क्योंकि इस दुनियाँ में जिन लोगों ने अपने मक़्सद को पेशे नज़र रखा वह यहाँ से कामयाब और सुर्खरू हो कर गए और यक़ीनन आखेरत में भी वह खुश अंजाम होंगे. और जिन लोगों ने अपनी पैदाइश का कोई मक़्सद ही नहीं जाना फुज़ूल व अबस कामों में लग कर उम्र बरबाद कर चले. दुनियाँ में मूमकिन है उनहें कुछ जाहो शोहरत मिल गई हो. मगर ऐसे लोगों का आखेरत में कोई हिस्सा नहीं होगा!.

प्यारे बच्चो! अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैह व आलिही वसल्लम को दुनियाँ के लिये एक नमूना और आईडियल बना कर भेजा है. तारीख हमें बताती है कि जिन लोगों ने उनके नक्शे क़दम की पैरवी की. वह ज़िन्दगी के हर महाज़ पर शाद काम होते हुए अपने मालिक व मौला से जा मिले. लिहाज़ा आओ हम भी अपने नबी ﷺ की बताई हुई सुन्नत और उनकी लाई हुई शरीअत पर अमल पैरा होने का अहद करें. ताकि दोनों जहान की कामयाबियों में से हमें भी कुछ हिस्सा मिल जाए. क्योंकि कामयाबी की हर खैरात. प्यारे मुस्तफा ﷺ की दहलीज़ ही से तक़सीम होती है.

नौनेहालो! तुम ज़िन्दगी के जिस मोड़ पर खड़े हो वह बड़ा ही नाज़ुक मोड़ है. आदतें वहीं से बनती और बिगड़ती हैं. अख्लाकी तरबियत का यह तोहफा मैं तुमहें इसी लिये पेश कर रहा हूँ. ताकि एक क़ाबिले रश्क ज़िन्दगी की तामीर में तुम इस से कुछ रौशनी हासिल कर सको. मेरी दोआएं तुमहारे साथ हैं. अल्लाह तुमहारे नसीब अच्छे करे. तुमहें सदा खुश रखे. और एक अच्छा इनसान बनाए.

–:खैर अन्देशः–

अबू रिफक़ा मुहम्मद अफरोज़ क़ादरी चिरैयाकोटी

दल्लास यूनिवर सिटी. कैपटाउन. साउथ अफ्रीक़ा

तक़रीज़े जमील

मुस्लेहे मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हजरत अल्लामा मुहम्मद अब्दुल मुबीन नुमानी कादरी-दामत बरकातहुमुल आलिया-

بسم الله الرحمٰن الرحيم
نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّی وَ نُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم
وَ آلِهٖ وَ صَحْبِهٖ أجْمَعِيْن .

बच्चों की तरबियत और उनको इस्लामी तालीम से आरास्तह करना वालेदैन पर फर्ज़ है हत्ता कि यह नफ्ल इबादत से भी बेहतर है. कुरआन पाक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फरमान है:

يٰـــاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا قُوا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (सूरए तहरीम:6/66)

ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसके एंधन आदमी और पत्थर हैं.

आदमी के अहल में आल औलाद भी है बल्कि औलाद को खास दर्जा हासिल है. इस लिये वालेदैन की ज़िम्मेदारी है कि अपनी औलाद को दीनी तालीम दिलाएँ. अगर इस में गफ्लत बरती गई तो इस का खमियाज़ा उनहें तो भुगतना ही पड़ेगा खुद इस दुनियाँ में भी उनहें इसके भयानक नताएज से दो चार होना पड़ेगा और वालेदैन से क़यामत में भी बाज़ पुर्स होगी. चुनानचा मुफस्सिरे कुरआन सदरुल अफाज़िल–अलैहिर्रहमा–मज़कूरह आयत की तफसीर में फरमाते हैं:

अल्लाह तआला और उस के रसूल की फरमाँबरदारी इख्तेयार

करके. इबादतें बजा लाकर. गुनाहों से बाज़ रह कर. और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानेअत करके और उनहें इल्मो अदब सिखा कर (जहन्नम की आग से खुद और घर वालों को बचाओ).

यानी वालेदैन की ज़िम्मेदारी है कि अपने साथ अपने अहलो अयाल को भी दोज़ख के अज़ाब से बचाने की फिक्र करें और सिर्फ अपनी फिक्र में न रहें कि यह खुदगर्ज़ी है. कुरआन खुदगर्ज़ी का सख्त मुखालिफ है. वह इरशाद फरमाता है:

تَعَاوَنُوا عَلَى البِرِّ وَالتَّقْوىٰ وَلاَ تَعَاوَنُوا عَلَى الاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ (सूरए माएदा:2/5)

नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़्यादती पर बाहम मदद न करो. और अल्लाह से डरो.

हज़रत उमर फारूके आज़म–रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो–फरमाते हैं कि जब आयते करीमा قُوا اَنْفُسَكُمْ नाज़िल हुई तो मैंने अर्ज़ किया: यारसूलल्लाह! अपने आप को तो दोज़ख से बचाने का मतलब समझ में आगया. अपने अहलो अयाल को कैसे बचाएँ?. इरशाद फरमाया: तुम इस तरह उनहें बचाओ कि जिन चीज़ों से अल्लाह तआला ने तुमहें मना किया है अपने अहलो अयाल को भी उनसे रोको और जिन कामों को बजालाने का हुक्म दिया है तुम उनको भी हुक्म दो कि वह उनहें बजालाएँ.(तफसीरे कुरतबी:18/173)

बाज़ उलमा ने कहा: (قُوا اَنْفُسَكُمْ)से आदमी की अपनी ज़ात और औलाद भी मुराद है. और وَ اَهْلِيْكُمْ से दीगर अफरादेखाना. बीवी. गुलाम. लौन्डी और खुद्दाम वगैरह. लिहाज़ा हर शख्स पर फर्ज़ है कि वह अपने आपको. अपनी औलाद को. अपनी बीवी और खुद्दाम को अज़ाब से बचाने

की कोशिश करे यानी उनको दीन की तालीम दे या दिलाए.

सरकारे ज़ीवकार सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने औलाद की तालीम व तरबियत की बहुत ताकीद फरमाई है. एक हदीस शरीफ में आया:

مَا نَحَلَ وَالِدٌ وَالِداً مِنْ نَحْلٍ أَفْضَلَ مِنْ أَدَبٍ حَسَنٍ(١)

यानी अच्छी तरबियत और अदब से बढ़ कर किसी बाप का अपने बेटे को कोई अतियह नहीं हो सकता.

यहाँ पर 'अदबे हुस्न' से अच्छी तरबियत. अच्छी नसीहत और अच्छी तालीम मुराद है. और इसी लिये सरकारे अक्दस सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने उम्मत को हुक्म दिया:

مُرُوا صِبْيَانَكُمْ بِالصَّلوٰةِ إِذَا كَانُوا سَبْعاً وَاضْرِبُوهُمْ عَلَيْهَا إِذَا كَانُوا عَشْراً وَفَرِّقُوا بَيْنَهُمُ الْمَضَاجِعَ(٢)

यानी अपने बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो जब वह सात साल के हों. और उन को इस लिये मारो जब वह दस साल के होजाएँ(और न पढ़ें) और उनके दरमियान बिस्तरों को अलाहेदा करदो.

---

(1) सुनन तिरमिज़ी:7/206हदीस:1875......मुस्नद:30/420हदीस:14856......सुनन कुबरा बैहक़ी:3/84......मुअ़जमे कबीर तिबरानी:10/458हदीस:13056......सुनन दार कुतनी:2/481हदीस:899......मुस्नद अब्द बिन हमीद:1/404हदीस:364......कंजुल उम्माल:16/456हदीस:45411......मौसूअ़ह अतराफुलहदीस:1/253150हदीस:252550.

(2)मुस्नद अहमद:13/440हदीस:6402......मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा:1/382......सुनन कुबरा बैहकी:2/229......सुनन दार कुतनी:2/495हदीस:900......मौसूअह अतराफुल हदीस:1/257597हदीस:257117......मौसूअतुत्तखरीज:1/19353.

हमें चाहिये कि अपनी औलाद को दीनी तालीमोतरबियत से आरास्तह करें. ताकि वह बेराह रवी का शिकार न होजाएँ. आज के बच्चों और बच्चियों को जब हम अस्री स्कूलों और यूनिवरसिटियों में डालते हैं तो यह नहीं देखते कि वहाँ लादीनी तालीम दीजाती है और इस्लामी उसूलों से उनहें कोई सरो कार नहीं होता. ज़बान व फन की तो तालीम वहाँ होसकती है. लेकिन इस्लामी अदब और दीनी तहज़ीब के लिये खुद तवज्जोह देनी ज़रूरी है.

आज हम सिर्फ तालीम की धुन में शरीअत की सारी हदों को फलाँग जाते हैं और अंजाम से भी बिल्कुल बेपरवाह रहते हैं. और जब बुरे नताएज सामने आते हैं तो कफे अफ्सोस मलने के सिवा चारा नहीं रहता. लिहाज़ा इस बात की सख्त जरूरत है कि अपने बच्चों और बच्चियों को रसूले काइनात सल्लल्लहो तआला अलैहे वसल्लम की तालीमात और उनकी प्यारी प्यारी बातों से क़रीब किया जाए. उनहें वह अहादीसे तय्यबा सुनाइ जाएँ जो उनके दिल व दिमाग को पाकीज़गी अता करें और ज़माने की ज़हरीली फज़ाओं के बुरे असरात से महफूज़ रख सकें.

यह चालीस अहादीसे मुबारका का हसीन गुलदस्ता चालीस नसीहत अंगेज़ और इबरत आमोज़ हेकायात के साथ इसी लिये पेश किया जारहा है ताकि इनहें हमारे बच्चे पढ़ें और अपने मुस्तक़्बिल को रौशन करें. इसे अज़ीज़ी मौलाना मुहम्मद अफरोज़ कादरी चिरैयाकोटी–हिफजुहू रब्बुहू व ज़ीद–इल्मुहू. ने बड़ी मेहनतों से बच्चों के लिये सजाया बनाया है.

अदबे अतफाल पर लिखने और तवज्जोह देने वाले आज बहुत कम हैं. मौलाना मौसूफ ने इस मौज़ू पर एक अच्छी किताब लिख कर बड़ा अहम काम किया है. अन्दाज़े बयाँ भी उछूता और नादिर है और साथ ही निहायत मुअस्सिर भी कि एक एक हेकायत बयान करके इसके मुतअल्लिक हदीसें तलाश करके पेश करदी हैं. बच्चे चूंकि कहानियों और वाकेआत से ज़्यादा दिलचस्पी लेते हैं इस लिये यह अन्दाज़ ज़रूर मुफीद होगा और यह किताब इंशा अल्लाह मक़बूल भी होगी.

मेरी गुज़ारिश है कि वालेदैन अपने बच्चों को और मदारिस व मकातिब के असातेज़ा अपने तलबा को इस किताब के मुताला की तलक़ीन करें. बल्कि मदारिस के ज़िम्मेदार हज़रात इसे बच्चों के कोर्स में दाखिल करदें तो मुताले व इस्तेफादे की राह और ज़्यादा आसान होजाएगी.

وصلی اللّٰہ تبارک وتعالیٰ علی خیر خلقہٖ محمدنِ النبی
المصطفیٰ وعلیٰ آلہٖ وصحبہٖ وبارک وسلم

मुहम्मद अब्दुल मुबीन नुमानी क़ादरी

अलमजमउल इस्लामी. मिल्लत नगर. मुबारकपूर. आज़मगढ़.
इन्डिया(276404)

खादिम: दारुल उलूम क़ादरिया. चिरैयाकोट. मऊ. यूपी.
इन्डिया(276129)

1

बेगर्ज़ नेकी

एक नेक औरत कहीं गाड़ी में सवार जारही थी कि उसे सड़क पर छोटी उम्र का एक लड़का नज़र आया. जो नंगे पाँव चला जारहा था और बहुत थका हुवा मालूम होता था. यह देख कर नेक औरत ने ड्राइवर से कहा. गरीब लड़के को गाड़ी में बिठा लो. उस का किराया मैं अदा कर दूंगी.

इसके बीस साल बाद उसी सड़क पर एक कप्तान. गाड़ी पर सवार चला जारहा था. उसकी नज़र इत्तेफाक़न एक बूढ़ी औरत पर जा पड़ी. जो थकी हुई चाल से पैदल चल रही थी. यह देख कर कप्तान ने ड्राइवर को हुक्म दिया कि गाड़ी रोक कर उस बुढ़ी औरत को भी साथ बिठालो. उस का किराया मैं अदा कर दूंगा.

जब मनज़िल पर सारी सवारियाँ गाड़ी से उतरने लगीं तो बूढ़ी औरत ने कप्तान का शुक्रिया अदा करके कहा कि इस वक़्त मेरे पास किराया अदा करने के लिये दाम नहीं है.

कप्तान ने कहा तुम बिल्कुल फिक्र न करो. मैंने किराया दे दिया है. क्योंकि मुझे बूढ़ी औरतों को पैदल चलते देख कर हमेशा तरस आजाता है. वजह यह है कि कोई बीस साल हुए

जब मैं गरीब लड़का था. मुझे इसी जगह कहीं आस पास सड़क पर नंगे पाँव पैदल चलते देख कर एक रहम दिल औरत ने गाड़ी मे बिठा लिया था. बूढ़ी औरत ने ठंडी साँस भरते हुए कहाः कप्तान साहब! वह औरत यही कम नसीब बुढ़िया है. मगर अब इसकी हालत इतनी बिगड़ गई है कि वह अपना किराया भी नहीं दे सकती.

कप्तान ने कहाः नेक बख्त अम्मा! अब आप इस का कोई गम न करें. मैंने बहुत सा रूपया कमा लिया है. और ज़िन्दगी के बाक़ी दिन आराम से काटने के लिये वतन आरहा हूँ. तुम जब तक ज़िन्दा रहोगी मैं बड़ी खुशी से तुमहारी खिदमत करूंगा.

यह सुन कर बुढ़ी औरत शुक्रिया अदा करती हुई रोपड़ी और कप्तान को दुआएँ देने लगी. और फिर कप्तान तमाम उम्र उस की मदद करता रहा.

प्यारे बच्चो! देखो हमारे आक़ाए करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम का फरमान कितना सच्चा और सुच्चा हैः

''हर नेकी का बदला दस गुना ज़्यादा करके मिलता है''.

إنَّ الُحَسَنَةَ بِعَشْرِ أمْثَالِهَا

(सही बुखारीः7/89हदीसः1840)

2

आधा कम्बल

एक दौलतमन्द सौदागर की बीवी मर गई थी. थोड़े अर्से के बाद वह खुद भी दमे के मर्ज़ में मुब्तेला होगया तो उस ने अपनी कुल जाएदाद अपने नौजवान बेटे के नाम करदी.

हज़ारों की जाएदाद पाकर पहले पहले तो नौजवान लड़का और उसकी बीवी बच्चे सब सौदागर की खूब अच्छी तरह खातिरदारी करते रहे. मगर ब्रस 6 महीने में जोश ठंडा होकर हालत यह होगई कि इलाज मुआलजा भी छूट गया और खाना भी वही मिलने लगा जो मामूली अन्दाज़ का घर में पकता था. बल्कि एक दिन तो नौजवान बेटे ने साफ कह दिया कि बाबा! आप अपनी चारपाई डेवढ़ी में बिछालें तो बेहतर हो कि हर वक़्त खाँसते रहने से बच्चों में बीमारी फैलने का अन्देशा है.

बीमार बाप को सब्र व शुक्र के सिवा चारा ही क्या था!. उसने कहा मुझे तो उज़्र नहीं मगर एक कम्बल ओढ़ने को चाहिये कि अभी सर्दी बाक़ी है.

नौजवान ने छोटे बेटे से कहाः दादा के लिये गाय को ओढ़ने वाला कम्बल उठा लाओ. लड़का झट कम्बल उठा

लाया. और दादा से कहाः लो दादा. इसमें से आधा तुम फाड़ लो और आधा मुझे देदो. दादा बोलाः भाला आधे कम्बल से सर्दी क्या जाएगी?. बाप ने भी बेटे से कहा कि दादा को सारा ही कम्बल देदो.

जिस पर छोटे लड़के ने बाप को मुखातब करके जवाब दियाः घर में ऐसा कम्बल तो एक ही है. अगर सारा दादा को दे दिया तो जब तुम बूढ़े और बीमार होकर डेवढ़ी में चारपाई बिछाओगे तो मैं तुमहें क्या दूँगा!.

नौजवान बाप लड़के की यह भोली बात सुन कर सुन होगया और बाप से माफी माँग कर पूरी एताअत और खिदमत करने लगा जिससे बाप भी खुश होगया और उसकी अपनी आकेबत भी संवर गई.

प्यारे बच्चो! देखो हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम ने एक मरतबा हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहो अन्हो को नसीहत करते हुए क्या खूब फरमाया थाः

"अपने बाप की फरमाँबरदारी करो जब तक वह हयात से हैं और (किसी हाल में) उनकी नाफरमानी न करो".

اَطِعْ أَبَاکَ مَا دَامَ حَيًّا وَ لَا تَعْصِهِ

(मुस्नद अहमद बिन हम्बलः 13/290हदीसः6252)

3

बुढ़िया की झोंपड़ी

कहते हैं कि नौशेरवाँ ने शाही महल बनवाना चाहा तो उसके चौकोर बनाने के लिये एक तरफ इस कदर ज़मीन की ज़रूरत थी जिस पर एक गरीब बुढ़िया की झोंपड़ी बनी हुई थी.

सरकारी मुलाज़िमों ने बुढ़िया से ज़मीन खरीदनी चाही. मगर उसने बेचने से इनकार कर दिया. नौशेरवाँ ने सुना तो हुक्म दिया कि महल चौकोर बने न बने मगर बुढ़िया बेसहारी पर जब्र न करना. बहर हाल! शाही महल एक तरफ टेढ़ा ही बन गया.

जब महल बन चुका तो बुढ़िया ने दरबार में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया: जहाँ पनाह! सच मुच शाही महल इस झोंपड़ी की ज़मीन लिये बगैर टेढ़ा तिरछा अच्छा नहीं मालूम होता. तो लिजिये अब मेरी यह ज़मीन बे क़ीमत हाज़िर है.

नौशेरवाँ ने पूछा: तुमने पहले देने से क्यों इनकार कर दिया था?. बुढ़िया ने जवाब दिया: सिर्फ इस लिये कि दुनियाँ भर में आपके इनसाफ का डंका बज जाए.

इस पर नौशेरवाँ ने बुढ़िया को बहुत सारा इनआमो

इकराम देकर रुखसत किया. उसकी ज़मीन भी न ली और महल को बदस्तूर टेढ़ा ही रहने दिया.

अज़ीज़ बच्चो. देखो कि नौशेरवाँ और बुढ़िया तो दोनों चल बसे. मगर इनसाफ की यह कहानी अब तक लोगों को याद है और हर एक से उस मुनसिफ बादशाह की तारीफ करा रही है. इसी तरह अगर हर शख्स अपने हर काम में इनसाफ और मुरव्वत से काम लिया करे तो उससे खालिक़ भी खुश होगा और मख्लूक़ भी.

प्यारे बच्चो! देखो मुअल्लिमे इनसानियत सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की तालीम कितनी सच्ची है.

"अदलोइनसाफ बहुत अच्छी चीज़ है लेकिन अगर
बादशाहों और बा इक़्तेदार लोगों में हो
तो फिर क्या कहने!".

العَدْلُ حَسَنٌ وَ لكِنْ فِي الأُمَرَاءِ أحْسَنُ

(कंजुल उम्माल 15/896हदीस:43542)

4

तरीक़ए शुक्र

शैख सादी शीराज़ी फारसी ज़बान के एक बहुत बड़े शाएर गुज़रे हैं. उनहें मुबल्लिगे अख़्लाक़ियात भी कहा जाता है"गुलिस्ताँ" और "बोस्ताँ" उनकी दो मशहूर किताबें हैं. जिनमें उनहोंने अख़्लाक का प्रचार किया है.

उनके अक़वाले ज़र्रीं ज़बान ज़दे खास व आम हैं और रोज़ मर्रा की गुफ्तगू में इस्तेमाल होते हैं. बड़े बुढ़े शैख सादी के पन्दो नसाएह अपने क़िस्से कहानियों में बयान करते रहते हैं.

एक दफा शैख सादी को हुसूले इल्म की गर्ज़ से शीराज़ से बग़दाद का सफर करना पड़ा. उस दौर में रेल गाड़ी. मोटर कारें या हवाई जहाज़ नहीं होते थे बल्कि एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिये घोड़े. ऊँट और हाथी पर सवार होकर जाना पड़ता था. या जो लोग गरीब होते थे वह पैदल ही सफर करते थे.

शैख सादी के पास भी सवारी के लिये कोई जानवर न था. इस लिये वह भी पैदल ही बग़दाद जारहे थे.

बग़दाद. शीराज़ से काफी फासले पर था और सादी

शीराज़ी पैदल थे. पैदल चलते चलते उनका जूता घिस कर टूट गया और ऐसी हालत इख्तेयार कर गया कि सादी के लिये उस जूते को पाँव में पहनना मुमकिन न रहा चुनानचा वह नंगे पाँव चलने लगे.

सफर अभी बहुत बाकी था. नंगे पाँव चलते चलते सादी के पाँव ज़ख्मी हो गए. पाँव में छाले पड़ गए. और फिर चलने से वह छाले फूटने लगे और तकलीफ बढ़ने लगी. यहाँ तक कि शैख सादी तकलीफ की शिद्दत से कराहने लगे. अब उनके लिये मज़ीद चलना दुश्वार होगया. वह एक जगह थक कर बैठ गए और अल्लाह तआला से गिला करने लगे कि ऐ अल्लाह! अगर तुने मुझे रकम दी होती तो मैं यूँ पैदल सफर न करता. न ही मेरा जूता टूटता. न मेरे पाँव ज़ख्मी होते और न मुझे यह तकलीफ बरदाश्त करना पड़ती!

अभी शैख सादी बैठे यही सोच रहे थे कि उनहें एक माजूर शख्स दिखाइ दिया जिस के दोनों पाँव सिरे से थे ही नहीं और वह खड़ा भी नहीं हो सकता था. फिर भी वह अपने धड़ की मदद से ज़मीन पर बैठ कर खुद को घसीट कर चल रहा था.

सादी ने जब यह मंज़र देखा तो खुदा से माफी माँगी और उसका शुक्रिया अदा किया कि मेरे दोनों पाँव सलामत हैं. मैं खड़ा भी हो सकता हूँ. चल भी सकता हूँ. क्या हुवा जो

मेरे पास रकम नहीं. सवारी का जानवर नहीं या जूते नहीं!. इस ख्याल के आते ही सादी ने दोबारा अपने सफर का आगाज़ कर दिया.

प्यारे बच्चो! देखो कि शैख सादी को अपनी गलती का एहसास किस तरह हुवा. इससे पता चला कि इनसान को हर हालत में खुदा का शुक्र अदा करते रहना चाहिये. अगर वक्ती तौर पर कोई परेशानी या मुसीबत आजाए तो फौरन अल्लाह तआला से उसका गिला नहीं करना चाहिये और हमेशा अपने से कम मरतबा लोगों पर निगाह रखना चाहिये कि उस से इनसान के अनदर नेमत की कदर और खालिक़ के शुक्र का एहसास पैदा होता है.

अज़ीज़ बच्चो! देखो हमारे प्यारे आका सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम ने हमें कितनी प्यारी नसीहत फरमाई है:

"उनहें देखा करो जो तुम से कमतर हैं
और उनहें न देखो जो तुमसे बालातर हैं".

اُنظُرُوا إلیٰ مَنْ اسْفَلَ مِنکُمْ
وَ لاَ تَنْظُرُوا إلیٰ مَنْ هُوَ فَوقَکُمْ

(सही मुस्लिम: 14/213हदीस5264)

5

हिरनी की दुआ

पुराने ज़माने की बात है. अफगानिस्तान के मुल्क पर एक बादशाह हुकूमत करता था. उस का एक गुलाम था जिस का नाम सुबुक्तगीन था. वह बहुत बहादुर अकलमन्द. और रहम दिल था. उसकी इनही खूबियों की वजह से बादशाह उसे बहुत अज़ीज़ रखता था. एक रोज़ की बात है कि सुबुक्तगीन घोड़े पर सवार होकर जंगल में शिकार खेलने गया. वह बड़ा अच्छा शिकारी था. मगर उस रोज़ ऐसा इत्तेफाक़ हुवा कि शाम तक जंगल में मारा मारा फिरने के बाद भी कोई शिकार उसके हाथ न आया.

जब वह वापस हाने लगा तो हिरनी का एक बच्चा उसके सामने से गुज़रा. उसने झट घोड़े से उतर कर उसे पकड़ लिया. फिर उसको घोड़े की काठी के साथ बाँध कर अपने आगे रख लिया और वापस शहर की तरफ चल पड़ा.

कुछ देर के बाद उसने पीछे मुड़ कर देखा तो हैरान रह गया. हिरनी उसके पीछे पीछे आरही थी और यूं लगता था जैसे उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं. हिरनी का बच्चा भी बुरी तरह तड़प रहा था. सुबुक्तगीन को यह देख कर हिरनी और उसके बच्चे पर बड़ा तरस आया. वह फौरन घोड़े से उतरा और हिरनी के बच्चे को छोड़ दिया. बच्चा आज़ाद होते

ही अपनी माँ के पास चला गया. हिरनी ने बच्चे को दूध पिलाया और फिर उसे साथ लेकर जंगल की तरफ चली गई. वह बार बार मुड़ कर सुबुक्तगीन की तरफ देखती थी जैसे उसका शुक्रिया अदा कर रही हो. उस रात सुबुक्तगीन ने खाब में देखा कि एक नूरानी सूरत बुजुर्ग उस से कह रहे हैं:

ऐ सुबुक्तगीन! तुमने एक बे ज़बान जानवर पर रहम खाया. तुमहारे इस काम से अल्लाह बेपनाह खुश हुवा है और सिले में उसने तुमहें बादशाहत बख्श दी है.

इस खाब के कुछ अर्से के बाद बादशाह ने अपनी बेटी की शादी सुबुक्तगीन से करदी. बादशाह के यहाँ बेटी के एलावा और कोई औलाद न थी. इस लिये उसके मरने के बाद सुबुक्तगीन अफगानिस्तान का बादशाह बन गया. इस तरह हिरनी पर रहम करने की वजह से एक मामूली गुलाम को एक मुल्क की बादशाहत मिल गई.

प्यारे बच्चो! हमेशा जानवरों पर रहम किया करो. उनहें बेजा तंग न किया करो. देखो आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उम्मत को कितनी अच्छी तालीम दी है:

"इन बे ज़बान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरो (और उनके साथ रहम व मुरव्वत का मुआमिला करो)".

اِتَّقُوا اللّٰهَ فِي هٰذِهِ البَهَائِمِ المُعْجَمَةِ

(सुनन अबू दाऊद:7/90हदीस:2185)

6

इल्म की शमा

सुल्तान महमूद गज़नवी. अफगानिस्तान के बादशाह सुबुक्तगीन का बेटा था. वह एक बहादुर सिपाही. तजर्बा कार जरनील. इनसाफ पसन्द बादशाह और सच्चा मुसलमान था. वह आलिमों का बहुत बड़ा कद्र दान था. बड़े बड़े अहले इल्मोदानिश उसके दरबार में जमा होते थे.

महमूद अभी छोटी उम्र ही का था कि एक रात वह किसी काम से महल से बाहर गया. उस ज़माने में सड़कों और गलियों में रौशनी का इनतेज़ाम नहीं होता था. सिर्फ बड़े बड़े चौराहों पर खम्बों के साथ चराग लटका दिये जाते थे. महमूद. महल से बाहर निकला तो शाही खादिम चराग उठाए उसके साथ साथ चल रहे थे.

एक जगह वह क्या देखता है कि एक खम्बे में एक चराग लटक रहा है. और उस चराग के नीचे एक लड़का किताब पढ़ रहा है. महमूद उसके पास आकर रुक गया और उससे पूछने लगाः तुम कौन हो?.

लड़के ने अदब से जवाब दियाः हुज़ूर! मैं एक तालिबेइल्म हूँ.

महमूद ने पूछाः इस वक़्त यहाँ क्यों खड़े हो?.

लड़के ने जवाब दियाः हुज़ूर! मेरे माँ बाप बहुत गरीब हैं. मेरे लिये चराग का खर्च बरदाश्त नहीं कर सकते. इस लिये मैं यहाँ आजाता हूँ. और सरकारी चराग के नीचे खड़े होकर सबक़ याद करता हूँ-

महमूद ने यह सुन कर अपने एक खादिम की तरफ देखा और उस से कहाः तुम इस लड़के के साथ जाओ और यह चराग और एक साल के लिये तेल का खर्च इसके घर दे आओ.

खदिम चराग लेकर लड़के के साथ उसके घर गया और चराग और उसके साथ एक साल के लिये तेल का खर्च दे आया.

उस रात महमूद जब बिस्तर पर लेटा तो उसे खाब में एक बुज़ुर्ग नज़र आए. उनहोंने फरमायाः

महमूद! तुमने एक गरीब तालिबेइल्म के घर में जिस तरह इल्म की शमा रौशन की है. अल्लाह तआला उसी तरह तुमहारा नाम रौशन करेगा.

चुनानचा जब महमूद गज़नवी बादशाह हुवा तो उसने हिन्दुस्तान पर सत्तरह हमले किये और यहाँ इस्लाम का बोल बाला किया.

इसी वजह से मुसलमान उसे गाज़ी और मुजाहिद

समझते हैं और इस्लाम की तारीख में उसका नाम शमा की तरह रौशन है.

प्यारे बच्चो! तुमने देखा कि एक गरीब की मदद ने महमूद गज़नवी को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया!. क्या खूब फरमाया है हमारे प्यारे नबिये अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम नेः

"जो किसी तंगदस्त की परेशानी दूर करता है अल्लाह दुनियाँ और आखेरत में उस पर आसानी के रास्ते खोल देता है".

مَنْ يَسَّرَعَلٰى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالاٰخِرَةِ .

(सही मुस्लिमः13/212हदीसः4867)

7

अकलमन्द शागिर्द

हज़रत जुनैद बग़दादी एक बहुत बड़े बुजुर्ग गुज़रे हैं. उनके बहुत से मुरीद और शागिर्द थे. उनमें एक शागिर्द ऐसा था जिसके साथ आप बहुत मेहरबानी से पेश आते थे. हज़रत जुनैद के दूसरे शागिर्दों को यह बात अच्छी नहीं लगती थी. उनहोंने एक रोज़ उनसे शिकायत करते हुए कहा कि आखिर वह भी हमारी ही तरह आपका शागिर्द है. फिर आप उसके साथ हमसे ज़्यादा अच्छा सुलूक कयों करते हैं?.

हज़रत जुनैद बग़दादी ने जवाब दिया: मेरा यह शागिर्द अख़्लाक़ व अदब और इल्मोदानिश में तुमसे बढ़ा हुवा है. इसी वजह से मैं इसे ज़्यादा अज़ीज़ रखता हूँ. तुमहारी तसल्ली के लिये एक रोज़ इसका इम्तिहान भी हो जाएगा.

इसके चन्द रोज़ बाद हज़रत जुनैद बग़दादी ने अपने शागिर्दों को जमा करके उनहें एक एक मुर्गी और एक एक छुरी दी और कहने लगे: जाओ इन मुर्गियों को ऐसी जगह ज़बह करो जहाँ कोई देखने वाला नहो.

सब शागिर्द गए और अपनी अपनी मुर्गी को ऐसी जगह पर ज़बह करके लेआए जहाँ कोई आदमी न था. मगर वह

शागिर्देरशीद उसी तरह ज़िन्दा मुर्गी वापस लेआया. हज़रत जुनैद बग़दादी ने उस से पूछा: कयों भई! तुमने मुर्गी को ज़बह कयों नहीं किया?.

शागिर्द ने नेयाज़ मन्दी से अर्ज़ किया: हुज़ूर! मुझे ऐसी कोई जगह नहीं मिल सकी जहाँ कोई देखने वाला न हो. मैं जिस जगह भी गया वहाँ अल्लाह तआला को मौजूद पाया. इस लिये मजबूर होकर मुर्गी वापस लेआया हूँ.

यह सुन कर हज़रत जुनैद बग़दादी ने अपने दीगर शागिर्दों से फरमाया:

तुमने देख लिया कि जितनी अक्ल व बसीरत इसमें है तुम में किसी के अन्दर नहीं. बस यही बात मुझे इसे ज़्यादा इज़्ज़त देने पर मजबूर करती हैं.

प्यारे बच्चो! हज़रत जुनैद बग़दादी का यह अमल हमारे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम की इस हदीस के ऐन मुताबिक था:

"लागों के साथ उनकी अक्लोदानिश के मुताबिक सुलूक किया करो".

(अलमकासिदुलहसना:1/52)

8

दर्ज़ी की कैंची

हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ अपने ज़माने के मशहूर वली थे. दो आदमी उनकी शोहरत सुन कर बड़ी दूर से उनसे मिलने के लिये आए. जब वह उनकी खानक़ाह में पहुँचे तो मालूम हुवा कि वह बादशाह के दरबार में गए हैं.

उन आदमियों ने सोचा कि यह कैसा वली है जो बादशाहों के दरबार में जाता है. वली तो वह है जो दुनियाँ से कोई तअल्लुक न रखे. यह सोच कर उनहोंने हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ से मिलने का ख्याल छोड़ दिया और खानकाह से निकल कर शहर की तरफ चल दिये. वह शहर में घूम फिर रहे थे कि एक दर्ज़ी की दुकान पर नज़र पड़ी. सफर में उनके कपड़े जगह जगह से फट गए थे. उनहोंने दर्ज़ी से सूई धागा लिया और अपने कपड़े मरम्मत करने बैठ गए.

वह दोनों तो अपने काम में लगे हुए थे कि इतने में एक शख्स आया और मौक़ा पाकर दर्ज़ी की क़ैंची उठाकर लेगया. दर्ज़ी अपने काम में मसरूफ था उसे उसकी खबर न हुई. थोड़ी देर बाद जब दर्ज़ी को कैंची की ज़रूरत पड़ी तो उसने इधर उधर देखा मगर क़ैंची कहीं न पाई.

उसने ख्याल किया कि क़ैंची इन दोनों आदमियों ने ही चुराई है. उसने उनसे क़ैंची माँगी. जब उनहोंने इनकार किया तो दर्ज़ी ने शोर मचाया कि यह दोनों चोर हैं. बहुत से लोग शोर सुनकर जमा होगए.

उन आदमियों को उस शहर में कोई नहीं जानता था तो उनका साथ कौन देता! चुनानचा दर्ज़ी उन दोनों को पकड़ कर बादशाह के दरबार में लेगया और कहने लगा कि यह लोग चोर हैं इनसे मेरी क़ैंची दिलवाई जाए. हज़रत अब्दुल्लाह हनीफ भी बादशाह के पास बैठे थे. उनहोंने उन आदमियों पर एक निगाह की और फिरासते मोमिनाना से फौरन सारी बात जान गए. उनहोंने बादशाह से फरमायाः

यह बेचारे तो दर्वेश हैं इनहें चोरी से क्या गर्ज़! यह दर अस्ल मुझसे मिलने की खातिर बड़ी दूर से चल कर आए हैं. दर्ज़ी की क़ैंची किसी और शख्स ने उठाई होगी.

प्यारे बच्चो! तुमने देखा कि एक अल्लाह वाले की निगाह कहाँ तक काम करती है!. यही सबक़ हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम ने भी दिया है:

"बन्दए मोमिन की फिरासत(और निगाहे बसीरत)से होशियार रहा करो कयोंकि वह अल्लाह के नूर से देखा करता है".

اِتَّقُوا فِرَا سَةَ الْمُؤمِنِ فَإِنَّهُ يَنْظُرُ بِنُورِ اللّٰهِ

(सुनन तिरमिज़ी:10/399हदीस:3052)

9

ईमानदार ताजिर

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा–अलैहिर्रहमा–फिक़्ह व हदीस के बहुत बड़े आलिम थे. आप मुल्के इराक़ के एक मशहूर शहर कूफा के रहने वाले थे और कपड़े का कारोबार किया करते थे. आपको हमेशा इस बात का ख्याल रहता था कि जो आमदनी भी हो वह हक़ हलाल की हो.

एक बार आपने अपने एक नौकर को कपड़े के कुछ थान दिये कि जाकर बाज़ार में फरोख्त कर आओ. उनमें से एक थान में कुछ खराबी थी. आपने नौकर को समझाते हुए कहा कि देखो! जब तुम यह थान फरोख्त करने लगो तो गाहक को बता देना कि इसमें यह खराबी है. ताकि गाहक धोके में न रहे.

नौकर थान लेकर बाज़ार चला गया. इत्तेफाक़ ऐसा हुवा कि तमाम थान बड़ी अच्छी क़ीमत पर बिक गए. मगर नौकर को उस बात का ख्याल न रहा जो इमाम अबू हनीफा ने समझाई थी. उसने गाहक को बताया ही नहीं कि इनमें से एक थान खराब और ऐबदार है.

थानों की फरोख्त से जो रक़म मिली. नौकर उसे लेकर

खुश खुश आया उसका ख्याल था कि यह रक़म देख कर इमाम साहब बहुत खुश होंगे मगर जब नौकर ने वह रक़म आपके हवाले की तो आपने उस से पूछाः

क्या तुमने वह खराब थान गाहक को दिखा दिया था और उसे बता दिया था कि इसमें नक़्स है?.

कहाः हुज़ूर! मुझे तो ख्याल ही नहीं रहा. गाहक ने थानों की ऐसी अच्छी क़ीमत लगाई थी कि खुशी के मारे आपकी बात भूल ही गया!.

यह सुन कर इमाम अबू हनीफा ने रक़म नौकर को वापस करते हुए फरमाया कि जाओ यह तमाम रक़म खैरात कर आओ. यह हमारे लिये हलाल नहीं.

प्यारे बच्चो! धोका देही और किसी की आँख में धूल झोंकना बड़ी बुरी चीज़ है. देखो हमारे इमाम अबू हनीफा का तक़्वा कैसा था! और उनका यह अमल दर अस्ल रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम की इस हदीस का आइना दार था.

"जिसने किसी धोके से काम लिया वह
हम में से नहीं है".

مَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا

(सही मुस्लिमः1/266हदीसः146)

10

माँ की खिदमत

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी. रहमतुल्लााह अलैहे. अल्लाह तआला के मुक़र्रब वली थे. आप अपनी वालेदा की खिदमत को सबसे बड़ी इबादत और उनकी रज़ा मन्दी को दुनियाँ की सबसे बड़ी नेमत जानते थे.

एक रात वालेदा ने उनसे पानी माँगा. हज़रत बायज़ीद प्याला लेकर पानी लेने गए. सुराही को देखा तो वह खाली पड़ी थी. किसी और बरतन में भी पानी नहीं था. फिर क्या हुवा कि आप पानी की तलाश में दरिया की तरफ चल दिये.

उस रात सख्त सर्दी पड़ रही थी. जब आप दरिया से पानी लेकर वापस हुए तो वालेदा सो चुकी थीं. हज़रत बायज़ीद. प्याला लेकर वालेदा की पाएँती की तरफ खड़े होगए.

सर्दी की वजह से आपको बड़ी तकलीफ महसूस होरही थी. मगर आापने वालेदा की खिदमत पर अपने आराम को कुरबान कर दिया. और पानी का प्याला लिये चुप चाप खड़े रहे कि न मालूम कब वालेदा को प्यास सताए. वह पानी की

तलब में उठीं और मैं गाएब हूँ-

कुछ देर बाद आपकी वालेदा की आँख खुली तो उनहोंने देखा कि आप पानी का प्याला लिये खड़े हैं. वालेदा ने उठ कर पानी पिया और कहने लगीं:

बेटे! तुमने इतनी तकलीफ क्यों उठाई. पानी का प्याला मेरे बिस्तर के क़रीब रख देते. मैं उठ कर खुद पी लेती.

हज़रत बायज़ीद ने जवाब दियाः आपने मुझसे पानी माँगा था. मुझे इस बात का डर था कि जब आपकी आँख खुलेगी तो कहीं मैं आपके सामने हाज़िर न हूँ. वालेदा यह सुन कर बहुत खुश हुई और उनहें दुआएँ देने लगीं.

प्यारे बच्चो! माँ की खिदमत ने हज़रत बायज़ीद को विलायत व करामत में आला मक़ाम अता करदिया था. देखो हुजूर रहमते आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम के तअल्लुक से कितनी बड़ी बात फरमाँ गए. और इस बात को आपने ब तकरार तीन बार फरमाँयाः

"मेरी वसीयत है कि हर शख्स अपनी माँ की
खिदमत व एताअत बजा लाए"

أُوْصِي امْرأً بِأُمِّهِ

(सुनन इब्ने माजा:11/48हदीस:3647)

11

खुश अख़्लाक़ी

हिन्दुस्तान के बादशाहों में से एक नसीरुद्दीन बादशाह भी गुज़रा है. वह बहुत ही नेक और सादा दिल इनसान था. सरकारी खज़ाने से अपने लिये एक पैसा भी न लेता था. गुज़र औक़ात के लिये उसने खुश नवेसी इख्तेयार की. कलाम पाक और दूसरी किताबें लिख कर उनकी आमदनी से इख्राजात पूरे किया करता था.

एक दफा का ज़िक्र है कि कोई रईस. नसीरुद्दीन बादशाह से मिलने आया. आपने उसे अपने हाथ से लिखा हुवा एक कलाम पाक दिखाया. रईस उसे देख कर बहुत खुश हुवा. फिर गौर से मुलाहेज़ा करके बोलाः इसमें कुछ गलतियाँ हैं इनको दुरुस्त फरमाँ लिजियेगा.

रईस की निकाली हुई गलतियाँ हक़ीक़त में गलतियाँ न थीं. फिर भी नसीरुद्दीन ने बिल्कुल बुरा न माना बल्कि मुस्कुरा कर उसका बहुत शुक्रिया अदा किया. जिन गलतियों की उसने निशानदेही की थी उनके गिर्द हल्क़ा बना दिया. ताकि बाद में उनकी इस्लाह करदी जाए.

उस वक़्त जो लोग वहाँ मौजूद थे बादशाह की खुश अख्लाक़ी देख कर दंग रह गए. रईस के चले जाने के बाद बादशाह ने सब हल्क़े मिटा दिये. लोगों ने सबब पूछा तो बादशाह ने फरमाँया:

मुझे मालूम था कि गलती कोई नहीं है. मगर मैं अपने मेहमान को शरमिन्दा करना या उसका दिल दुखाना नहीं चाहता था. इसी लिये अपनी गलतियों का इक़रार करके उनके गिर्द हल्क़ा बना लिया और अब वह हल्क़े मिटा दिये.

बादशाह की खुश अख्लाक़ी से दरबारी बहुत मुतअस्सिर हुए. वह हैरान थे कि इतने बड़े बादशाह ने एक मामूली से रईस की दिल जूई के लिये इतने ज़बरदस्त अख्लाक का मुज़ाहेरा किया!.

प्यारे बच्चो! बादशाह का यह आला अख्लाक दरअस्ल हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम के इस फरमान की इत्तेबा में था:

"जो शख्स अल्लाह और रोज़े आखेरत पर ईमान रखता
है. उसे चाहिये कि खूब अच्छी तरह अपने
मेहमान की इज़्ज़त व तकरीम करे".

مَنْ كَانَ يُؤمِنُ بِاللّٰهِ وَالیَومِ الاٰخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ

(सही बुखारी:18/437हदीस:5559)

12

अल्लाह का खौफ

बसरा का एक अमीर ज़मीनदार जब अपने एक बाग में गया तो अपने ही नौकर माली की नौजवान बीवी को देख कर सब्र व करार खो बैठा. और उसकी गरीबी से नाजाएज़ फाएदा उठाना चाहा. ज़मीनदार ने माली को तो किसी काम के लिये बाग से बाहर रवाना कर दिया. और उस औरत की झोंपड़ी में दाखिल होकर कहाः दरवाज़े बन्द करदो.

माली की औरत ने कहाः मैं सब दरवाज़े बन्द कर सकती हूँ. लेकिन एक दरवाज़ा नहीं बन्द कर सकती. ज़मीनदार ने पूछाः वह कौनसा दरवाज़ा है?.

उस औरत ने जवाब दियाः जो मेरे और खुदा के दरमियान है.

उसकी यह बात कर ज़मीनदार के दिल में तीर बन कर उतर गई. वह बहुत मुतअस्सिर हुवा. और फौरन माफी माँगी और खुदा की बारगाह में सच्ची तौबा की.

प्यारे बच्चो! देखो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम की बात कितनी सच्ची हैः

"जहाँ भी रहो अल्लाह से डरते रहो"

(सुनन तिरमिज़ीः7/262हदीसः1910)

13

मज़्लूम की बद्दुआ

एक अमीर आदमी. गरीब लकड़हारों से बहुत ही कम दामों पर लकड़ियाँ खरीद लिया करता था और उनहें महंगे दामों. रईसों के हाथों फरोख्त किया करता था.

एक फक़ीर ने उस आदमी को इस जुल्म से मना किया कि यह बात ठीक नहीं है. कहीं इससे तुमहें कोई भारी नुक्सान न उठाना पड़ जाए. मगर उस आदमी ने फक़ीर की एक न सुनी और अपना काम करता रहा.

फिर एक दिन खुदा का करना ऐसा हुवा कि उस आदमी के घर में यका यक आग लग गई. सब हैरान थे कि आग लगी कैसे?.

उसी वक़्त उस फक़ीर का वहाँ से गुज़र हुवा. और उसने कहा: मैं बताता हूँ कि आग कैसे लगी!.

लोगों ने पूछा कि बताओ तो उसने जवाब दिया:

गरीबों की आह और मज़लूमों की बद्दुआ से.

प्यारे बच्चो! कभी किसी की मजबूरी से नाजाएज़ फाएदा नहीं उठाना चाहिये. देखो कि अगर उस अमीर आदमी को

हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की यह हदीस याद होती तो शायद ऐसी हरकत कभी न करता:

"मज़लूम की बद्दुआ से बचो. क्योंकि उसकी आह का अल्लाह की बारगाह से बराहे रास्त (डाएरेक्ट) तअल्लुक़ है. उसके बीच कोई चीज़ हाएल नहीं".

اِتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّهَا

لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللّٰهِ حِجَابٌ

(सही बुखारी:8/321हदीस:2268)

[14]

सब्र, बेहतरीन नेमत

दो मुसाफिर एक साथ सफर कर रहे थे. घूमते घूमते यह लोग शहरे खुरासान में पहुँच गए. उन दोनों साथियों में एक निहायत नहीफ व लागर था और वक़्त वक़्त से खाना खाता था. और दूसरा निहायत तनदुरुस्त व तवाना था और सुबह से शाम तक कुछ न कुछ खाता ही रहता था.

इत्तेफाक़ से खुरासान की पुलिस ने उन दानों को मुश्तबह हालत में देख कर गिरफ्तार कर लिया. और हवालात में बन्द कर दिया.

जब तीन दिन के बाद हवालात का दरवाज़ा खुला तो यह देख कर सब हैरत ज़दह रह गए कि वह दुबला पतला लागर आदमी ज़िन्दा सलामत है. और हँसता कूदता हुवा हवालात से बाहर आरहा है जब कि मोटा ताज़ा पहेलवान मरा पड़ा है.

मालूम हुवा कि मोटा ताज़ा आदमी ज़्यादा खाने वाला था. इस लिये मुसीबत बरदाश्त न कर सका और मर गया. और लागर आदमी को तो सब्र की आदत थी इस लिये उसने

सब्र किया और सलामती के साथ कैद से निजात पाई.

प्यारे बच्चो! सब्र से बड़ी कोई दौलत नहीं. जिसके अन्दर सब्र का माद्दा होता है वह बड़ी से बड़ी मुसीबत का खन्दा पेशानी से मुकाबला करलेता है. देखो हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने सब्र का क्या मक़ाम बयान फरमाया है:

"सब्र से ज़्यादा बेहतर और उस से बढ़ कर
कभी किसी को कोई नेमत नहीं मिली".

مَاأُعْطِيَ أحَدٌ عَطَاءً هُوَ خَيْرٌ
وَ أوْسَعُ مِنَ الصَّبْرِ .

(सही बुखारी:6/155हदीस:1585)

15

तसव्वुरे मौत

एक बार मशहूर बुजुर्ग हज़रत मारूफ करखी. रहमतुल्लाह अलैहे. का वजू जाता रहा तो आपने फौरन तयम्मुम फरमा लिया. लोगों ने अर्ज़ किया: हज़रत! दरिया बहुत क़रीब है. फिर अपने तयम्मुम क्यों किया?.

आपने फरमाया कि आप लोगों की बात बिल्कुल बजा है. मगर मुझे उम्मीद नहीं कि दरिया के पास पहुँचने तक मैं ज़िन्दा भी रहूँगा या नहीं!.

प्यारे बच्चो! हज़रत मारूफ करखी की यह सोच दरअस्ल आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की इस मारूफ हदीस की पैदावार थी:

"(मौत को दूर न ख्याल कर बल्कि हमा वक्त)
अपना शुमार मुर्दों में किया कर".

عُدَّ نَفْسَکَ فِي أهْلِ القُبُورِ

(सुनन तिरमिज़ी:8/323हदीस:2255)

16

मेहनती लोग

एक आदमी ने हातिम ताई से पूछा कि आपने अपने आपसे ज़्यादा कभी किसी को बुलन्द हिम्मत और बहादुर देखा है?. हातिम ने जवाब दिया. हाँ देखा है.

अमर वाकेआ यह है कि एक दिन मैंने चालिस ऊँट ज़बह किये थे और तमाम अहले इलाक़ा की दावत की थी. ऐन खाने के वक़्त मैं किसी काम से जंगल की तरफ निकल गया. वहाँ एक लकड़हारे को देखा कि मेहनत व मुशक़्क़त के साथ लकड़ियाँ काटने में मशगूल है. मैंने उससे कहा.

ऐ लकड़हारे! तू इस वक़्त यहाँ धूप में क्यों परेशान होरहा है?. जा हातिम ताई के यहाँ आज दावते आम है. मज़े लेले कर खा पी. यह सुन कर उसने जवाब दियाः जो लोग अपने हाथ से कमाई करना और मेहनत करके अपना पेट भरना जानते हैं वह हातिम का एहसान लेने की ज़रूरत ख्याल नहीं करते.

प्यारे बच्चो! हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमें कितनी अच्छी नसीहत फरमाइ हैः

वह कमाई सबसे बेहतर है जो इनसान खुद मेहनत करके कमाता है.

اَفْضَلُ الْكَسَبِ عَمَلُ الرَّجُلِ بِيَدِهٖ

(कंजुल उम्माल:4/9हदीस:9224)

17

इल्म, वरासते नबूवत

मिस्र में दो अमीर ज़ादे थे. एक ने इल्म सीखा और दूसरे ने दौलत कमाई हत्ता कि मिस्र का बादशाह बन गया.

फिर क्या हुवा कि बादशाह. आलिम को हेक़ारत से देख कर कहा करता था कि देखो इसने इल्म सीखने में वक़्त ज़ाए किया और आज नाने शबीना को मुहताज है. एक मैं हूँ कि दौलत के हुसूल की कोशिश के सबब आज अज़ीज़े मिस्र बन चुका हूँ.

आलिम ने उसकी बात सुन कर कहाः खुदा की नेमत का शुक्र अदा करना मुझ पर ज़्यादा वाजिब है. क्यों मैंने पैगम्बरों की मीरास पाई है यानी इल्मो हिकमत. और तुझे फिरऔन व हामान का तरका मिला है यानी मालो दौलत.

प्यारे प्यारे बच्चो! उस आलिम ने दरअस्ल आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की इस हदीस की तरफ इशारा किया था.

"उलमा, पैगम्बरों के वारिस होते हैं
जिनकी विरासत इल्म होती है".

اِنَّ العُلَمَاءَ هُمْ وَرَثَةُ الأنبِيَاءِ وَرَّثُوا العِلْمَ .

(सही बुखारी:1/119)

18

सिर्फ खुदा के लिये

हज़रत अली मुरतुज़ा रज़ी अल्लाहो अन्हो किसी जंग में एक काफिर से दू बदू लड़ रहे थे. अस्नाए जंग हज़रत अली ने हरीफ को ज़मीन पर गिरा दिया और क़रीब था कि आप उसका सर. तन से जुदा करदेते. इतने में उस काफिर ने आपके चेहरए मुबारक पर थूक दिया. हज़रत अली उसको छोड़ कर फौरन उठ खड़े हुए.

उस काफिर ने कहा: ऐ अली! क्या है कि तुमने मूझे छोड़ दिया जबकि मैंने तुमहारे साथ निहायत नाज़ेबा हरकत की है?.

आपने फरमाया: जब तक तो. तेरी और मेरी लड़ाई सिर्फ खुदा के लिये होरही थी. लेकिन अब मेरे नफ्स की जंग बन गई है. इस लिये मैंने तूझे छोड़ दिया. काफिर यह शान देख कर फौरन मुसलमान हो गया.

प्यारे बच्चो! आक़ा अलैहिस्सलाम ने हमें यही तो नसीहत फरमाई है:

"कोई भी काम करो तो यह न भूलो कि
अल्लाह तुमहें देख रहा है".

اِعْمَلْ لِلّٰہِ کَأَنَّکَ تَرَاہُ .

(शुअबुल ईमान:2/117हदीस:575)

19

नीयत पर मदार

एक बादशाह एक मरतबा शिकार को गया और जंगल में इत्तेफाक़ से रास्ता भूल कर अपने साथियों से बिछड़ गया. और तुर्रह यह कि शाम हो चुकी थी. बादशाह परेशानी से एक सम्त को देख रहा था. दूर बहुत दूर घने दरख्तों के दरमियान थोड़ी सी रोशनी नज़र आरही थी. बादशाह उसी तरफ चला और वहाँ पहुँचने पर देखा कि एक बूढ़ी औरत और एक नौजवान लड़की एक साफ सुथरी झोंपड़ी में मौजूद हैं.

बादशाह ने आगे बढ़ कर ज़ईफा को सलाम किया और रात में पनाह लेने की इजाज़त चाही. बुढ़िया ने बड़ी खुशी से मेहमान का इस्तिक़बाल किया और उसकी खूब आओ भुगत की. बादशाह ने देखा कि बुढ़िया की झोंपड़ी के पास एक ऐसी तन्दुरुस्त गाय बंधी है कि इस कदर तन्दुरुस्त और खूबसूरत गाय शाही महल में नथी. खैर सूबह हूई और बादशाह जब जागा तो क्या देखता है कि ज़ईफा की लड़की गाय का दूध निकाल रही है. बादशाह हैरान था कि गाय ने क़रीबन एक मन दूध दिया था.

उसी वक़्त बादशाह ने सोचा कि हो नहो यह जंगल की घास का असर है. अब दारुल हुकूमत पहुँचते ही जंगल को

चरागाह में तब्दील करादूँगा और यहाँ सिर्फ शाही मवेशी ही चराया करेंगे.

बादशाह को चूंकि रास्ता नहीं मालूम था. इस लिये वह साथियों की उम्मीद पर कि तलाश करते हुए वह ज़रूर आएंगे दिन भर ठहरा रहा मगर कोई न आया यहाँ तक कि शाम होगई और गाय जंगल से चल कर वापस आगई तो ज़ईफा ने कहाः बेटी! दूध निकाल ले. अंधेरा हुवा चाहता है जब वह लड़की दूध निकालने बैठी तो खिलाफे तवक़्क़ो दूध बहुत ही कम निकला. बुढ़िया ने दूध की कमी पर तबसेरा करते हूए कहाः लगता है कि हमारे बादशाह की नीयत में कुछ फर्क़ आगया है.

बादशाह यह सुन कर दिल ही दिल में बहुत शरमिन्दा हुवा और खुदा से तौबा की. जब सुबह को फिर गाय दूही गई तो वही कोई एक मन के क़रीब दूध निकला.

प्यारे बच्चो! नीयत के फुतूर का करिश्मा तुमने देखा!. इस लिये अपनी नीयत हमेशा साफ रखो और किसी की चीज़ देख कर लालच न किया करो. देखो हमारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने हमें कितना अच्छा फारमूला अता किया हैः

"मोमिन की नीयत उसके अमल से कहीं
ज़्यादा अहमियत की हामिल होती है".

نِيَّةُ المُؤمِنِ أَبْلَغُ مِنْ عَمَلِهِ

(मुस्नद शहाबुलकोज़ाइः1/237हदीसः140)

20

मज़ाक़ में झूट

बताते हैं कि पुराने ज़माने में एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चराया करता था. एक दिन उसने यूंही दिल लगी करते हुए शोर मचाया.

"लोगो दौड़ो दौड़ो भेड़िया आ गया".

बस्ती से तमाम लोग दौड़ पड़े. मगर वहाँ जाकर देखा कि चरवाहा मज़े में हँस रहा है और बकरियाँ सही व सालिम चर रही हैं. वह लोग बहुत शरमिन्दा हुए और वापस चले गए.

इसी तरह एक दिन चरवाहे को फिर शरारत सूझी और भेड़िया भेड़िया कहते हुए मदद के लिये लोगों को पुकारने लगा. लोग उसकी मदद को दौड़े. लेकिन फिर शरमिन्दा होकर वापस आना पड़ा.

एक दिन ऐसा हुवा कि सच मुच भेड़िया आगया. अब वह लाख शोर मचाता है और आवाज़ पर आवाज़ देरहा है. मगर कोई मदद को नहीं आया क्योंकि अब उसका एतेबार उठ चुका था. और नतीजा यह हुवा कि भेड़िया उसकी तमाम बकरियाँ चट कर गया.

प्यारे बच्चो! देखो हमारे आक़ा ने हमें कितनी अच्छी नसीहत फरमाई है अगर उस चरवाहे को यह नसीहत याद होती तो वह यक़ीनन उस भारी नुक़्सान से बच जाता.

"मोमिन उस वक़्त तक पक्का मोमिन नहीं बनता
जब तक कि हँसी मज़ाक़ में भी
झूट बोलना तर्क न करदे".

لاَ يُؤمِنُ العَبْدُ الإيمَانَ كُلَّهُ حَتّٰى يَتْرُكَ
الكَذِبَ فِي المُزَاحِ .

(मुस्नद अहमद:17/453हदीस:8411)

21

इत्तेफ़ाक़ ज़िन्दगी, इख़्तेलाफ़ मौत

एक दिन की बात है कि किसी शिकारी ने नदी के किनारे अपना जाल तान कर रख दिया. बहुत सारी चिड़ियाँ दाना चुगने की लालच में जाल के अन्दर जा फँसीं. यह देख कर शिकारी बहुत खुश हुवा. और दौड़ कर आया कि जल्दी से सारी चिड़ियों को पकड़ले. लेकिन जैसे ही वह जाल के क़रीब पहुँचा तो ड़र के मारे सारी चिड़ियाँ एक साथ ऐसा भागीं कि जाल भी साथ ले उड़ीं.

यह माजरा देख कर शिकारी के होश उड़ गए और सोचने लगा कि आखिर चिड़ियाँ जाल लेकर कैसे उड़ गईं. मगर वह हिम्मत नहीं हारा और चिड़ियों के पीछे लग गया.

रास्ते में उसे एक आदमी मिला और पूछने लगा कि तुम इस कदर तेज़ी से कहाँ भागे जारहे हो?. शिकारी ने आसमान में उड़ती हुई चिड़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा कि उनको पकड़ने की कोशिश कर रहा हूँ.

यह सुन कर वह आदमी हँस पड़ा और कहने लगा. अल्लाह तुमको अक़्ल व शोऊर दे. क्या तुम सच मुच समझ रहे हो कि उन उड़ती हुई चिड़ियों को अपने क़ाबू में कर लोगे!.

शिकारी ने कहाः अगर जाल में सिर्फ एक होती तो

शायद मैं उसे पकड़ने में कामयाब न होसकता. लेकिन अभी आप खुद अपनी आँखों से देखेंगे कि मैं उनहें कैसे पकड़ रहा हूँ!.

शिकारी की बात बिल्कुल दुरुस्त निकली. जब शाम का धुंधलका छाया. तो सारी चिडियों को अपने अपने घोंसले में जाने की फिक्र लाहिक़ होगई. फिर क्या हुवा कि किसी ने जाल को लकड़ियों की तरफ खींच कर ले जाना चाहा. किसी ने झील की तरफ जाने की कोशिश की. किसी ने पहाड़ की चट्टान की तरफ भागना चाहा. और किसी ने झाड़ियों का रुख करना चाहा. मगर उनमें से कोई कामयाब न होसकी. और नतीजा यह हुवा कि सारी चिड़ियाँ जाल लेकर नीचे ज़मीन पर गिर पड़ीं. शिकारी खुश खुश आया और सबको पकड़ कर लेगया.

बच्चो! तुमने देखा कि इत्तेफाक़ में कितनी ताक़त व बरकत है. अगर वह सारी चिड़ियाँ एक सम्त महवे परवाज़ रहतीं तो शायद वह कभी शिकारी के चंगुल में न आतीं मगर जब उनमें इख्तेलाफ हुवा तो सब मौत के मूँह में चली गईं. इस लिये देखो कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने हमें कितना अच्छा सबक़ दिया है.

"लोगो! आपस में इख्तेलाफ न करो. जमाअत के साथ मिल कर रहो क्योंकि जो बकरी रेवड़ से अलग हो जाती है वह भेड़िये का लुकमा तर बन जाती है".

فَعَلَيْكُمْ بِالجَمَاعَةِ فَإِنَّمَا يَأْكُلُ الذِّئبُ القَاصِيَةَ

(सुनन निसाइ:3/363हदीस:838)

22

शेर जब दोस्त बन गया

बहुत दिनों की बात है कि एक शहर में मुजरिम को सज़ा देने का तरीक़ा बड़ा ज़ालिमाना था. जब कोई किसी जुर्म का इरतेकाब करता तो लोग उसे भूके शेरों के आगे डाल देते थे. आज एक बार फिर लोग उस हैबतनाक मंज़र को देखने के लिये एकट्ठा हुए है.

आज का मुजरिम एक भगौड़ा गुलाम है. एक ऊँची सी चहार दीवारी के अन्दर पहले गुलाम को लाकर छोड़ दिया गया फिर एक भूके शेर को उसके अन्दर जाने की इजाज़त देदी गई. शेर ने अपने पंजा से उस बेकस आदमी पर हमला करने की तैयारी मुकम्मल करली. मगर फिर अचानक क्या हुवा कि वह आगे बढ़ कर उस गुलाम के हाथ चाटने लगा.

यह देख कर तमाशाई हैरत में पड़ गए. और गुलाम से उसका माजरा पूछा. तो उसने जवाब दिया. एक दिन मैंने इस शेर को एक जंगल में देखा कि लड़खड़ाता हुवा चल रहा है. दरअस्ल इसके पंजे में एक काँटा चुभ गया था जिसके बाइस वह बड़ी तक्लीफ में था. मैंने इसकी बेकसी पर तरस खाते हुए इसके काँटे को निकाल दिया. उस दिन से

हम एक दूसरे के जिगरी दोस्त बन गए हैं.

इस कहानी ने लोगों को बेहतरीन सबक़ सिखा दिया. और उनहोंने शेर और गुलाम दोनों को आज़ाद कर दिया. लोगों की हैरत और हैरानगी उस वक़्त इन्तिहा को पहुँच गई जब देखा कि शेर गुलाम के पीछे पीछे चल रहा है जैसे पालतू बिल्ली किसी के साथ चल रही है.

प्यारे बच्चो! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने क्या खूब फरमाया है:

''रहमो मुरव्वत करने वालों पर अल्लाह रहमानो रहीम
भी रहम फरमाता है ज़मीन वालों पर रहम करो
आसमानी मख्लूक तुम पर रहम खाएगी''.

الرَّاحِمُونَ يَرْحَمُهُمُ الرَّحْمٰنُ، اِرْحَمُوا مَنْ فِي الأَرْضِ
يَرْحمُكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ

(सुनन तिरमिज़ी:7/161हदीस:1847)

23

जल्दी का फैसला

एक मुहल्ले में दो हमसाए पास पास रहते थे. एक बड़ा लड़ाका था और दूसरा धीमा और दाना. दाना के यहाँ कुछ मुर्गियाँ पली हुई थीं. मगर इस बात का हमेशा वह ख्याल रखता था कि हमसायों को तक्लीफ नहो. बाहर जाते वक़्त मुर्गियों को दाना पानी देकर बन्द कर जाता और जब घर आता तो खोल दिया करता था.

एक दिन यह घर में मौजूद न था कि मुर्गियाँ किसी तरह खाँचे से बाहर निकल आईं और उनहोंने लड़ाके हमसाए के घर जाकर कहीं बीट करदी. कहीं ज़मीन खोद खोद कर गड़हे डाल दिये. अलगरज़ हर जगह कूड़ा करकट फैला दिया.

लड़ाके ने देखा तो मारे गुस्से के बीसियों ही गालियाँ दीं और जल भुन कर एक मुर्गी की गरदन भी मरोड़ डाली.

यह गुस्से में भरा हुवा अभी बक ही रहा था कि दाना भी आ पहुँचा जिससे घर वालों ने शिकायत की कि उसके हमसाए ने नाहक गालियाँ देकर इतना शोर मचा रखा है. ज़रा जाकर पूछो तो सही. अगर जानवर आपसे आप निकल गए तो इसमें हमारा क्या क़सूर है!.

अकलमन्द ने सोचा कि ऐसे लड़ाके से समझदारी की

उम्मीद फुजूल है. दानाई यह है कि उसकी दुरुस्ती की कोशिश करनी चाहिये. यह सोच कर वह हमसाए के घर गया और नरमी से कहाः आज किसी तरह आपसे आप मुर्गियाँ निकल गई थीं. मुझे अफसोस है कि उनहोंने आपको तक्लीफ पहुँचाया. लाइये मैं आपके सेहन में झाडू देदूँ और कुछ नुक्सान हुवा हो तो वह भी पुरा करदूँ. दाना की इन मुलाएम बातों ने लड़ाके के दिल पर बड़ा असर किया. क्योंकि उसे तो एक मुर्गी का गला घोंट देने से हमसाए की तरफ से लड़ाई झगड़े का अन्देशा था. उसने फौरन दाना से माफी माँगी और फिर कभी ऐसी हरकत न की जिससे दूसरों को कोई तक्लीफ पहुँचे.

प्यारे बच्चो! कभी भी गुस्से की हालत में कोई फैसला नहीं लेना चाहिये. और जब तक दूसरे की बात न सुन ली जाए कोई फैसला नहीं देना चाहिये. देखो अगर इस लड़ाके को हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम की यह हदीसे मुबारक याद होती तो वह अपनी इस हरकत से बाज़ रहता.

''सोच समझ कर काम करना महज़ अल्लाह (की तौफीक़) से होता है. और जल्दी का अमल शैतान की तरफ से होता है''.

الأنَاةُ مِنَ اللّٰهِ وَالْعُجْلَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ

(सुनन तिरमिज़ी:7/298हदीस:1935)

24

इल्म की ताक़त

कोलम्बस–जिसने अमेरीका दरियाफ्त किया था. एक जहाज़रान का बेटा था. ऐसे लोगों को सितारों की चाल बखूबी मालूम होती है. क्योंकि इसी इल्म पर जहाज़रानी मौकूफ है.

एक दिन कोलम्बस को ख्याल आया कि समन्दर का दूसरा किनारा भी देखना चाहिये. क्या अजब कि उधर भी कोई मुल्क आबाद हो. चुनानचा शाही दरबार की इमदाद से दो जहाज़ लेकर बहरी सफर पर रवाना हुवा और सितारों की रह नुमाई से अमेरीका तक जा पहुँचा.

इस वक़्त तो अमेरीका दौलत व साइन्स की कान बना हुवा है. मगर उस वक़्त जो लोग वहाँ रहते थे बिल्कुल ही जंगली. वहशी और तरह तरह के वहमों में फँसे हुए थे. कोलम्बस ने उन पर हुकूमत जमाना चाही तो वह मुकाबले के लिये तैयार होगए.

कोलम्बस के साथी चूंकि तादाद में कम थे और फिर वह लड़ाई में भी पूरे नहीं उतर सकते थे. बिलआखिर सोचते

सोचते कोलम्बस को याद आगया कि कल सूरज गरहन लगने वाला है. इस ख्याल के आते ही उसने वहशियों के सरदार को बुला कर कहा: देखो! अगर तुम हमारी फरमाँबरदारी नहीं करोगे तो मैं सूरज को हुक्म दूंगा और वह तुमहें जला कर राख करदेगा.

उस वक़्त तो वहशी चुपके चुपके सुनते रहे. मगर दूसरे दिन जब सूरज को वाक़ेअतन गरहन लगना शुरू हुवा तो वह सख्त घबराए. और कोलम्बस को जादूगर और करिश्माती हस्ती समझ कर उसके पास हाज़िर होगए और बखुशी उसकी एताअत क़बूल करली.

प्यारे बच्चो! तुमने देखा कि इल्म की कितनी ताक़त है कि जो काम बहुत बड़ी फौज न कर सकती थी वह गुत्थी. इल्म के एक नुकते ने ज़रा सी देर में कैसे सुलझा दी!. प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने इसी लिये तो इल्म सीखने की हमें बहुत ज़्यादा तरगीब दी है:

''इल्म हासिल करो चाहे उसके लिये तुमहें मुल्के 'चीन' ही क्यों न जाना पड़े''.

اُطْلُبُوا العِلْمَ وَلَو بِالصِّينِ...

(कंजुल उम्माल:10/138हदीस:28697)

25

हुस्ने सुलूक

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम की सरबराही में जब मुसलमानों ने मक्का. फतह कर लिया तो उस वक़्त आपने देखा कि मक्का की एक ज़ईफ औरत सर पर एक भारी गठरी लिये भागी जारही है.

सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम को उस बूढ़ी औरत पर तरस आया कि बुढ़ापे के बावजूद उसने सर पर गठरी का बोझ उठा रखा है. चुनानचा आप उस बुढ़िया के क़रीब आए और उससे वजह पूछी कि वह इतना बोझ सर पर उठा कर कहाँ जारही है?.

उस बुढ़िया ने कहाः ऐ बेटे! मैं मुहम्मद नामी एक शख्स के खौफ से मक्का छोड़ कर जारही हूँ कि कहीं वह मुझसे मेरा मज़हब न छुड़ादे. आप उस बुढ़िया की बात सुन कर मुस्कुराए और फरमायाः माई इतनी भारी गठरी तु कैसे उठाएगी. ला यह बोझ मुझे देदे. मैं तुझे तेरी मनज़िल तक पहुँचा देता हुँ.

यह कह कर आपने वह गठरी अपने सर पर उठाली और बुढ़िया के साथ चल पड़े. तमाम रास्ते वह बुढ़िया मुहम्मद को बुरा भाला कहती रही और आप निहायत सब्र व तहम्मुल से

सुनते रहे. फिर जब बुढ़िया अपनी मनज़िल पर पहुँच गई तो आपने बुढ़िया की गठरी उसके हवाले करके वापसी की इजाज़त चाही. बुढ़िया ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम का बेहद शुक्रिया अदा किया और कहा कि ऐ सआदतमन्द इनसान! मैं तुझे एक नसीहत करती हूँ कि मक्का में मुहम्मद आगया है. वह बड़ा जादूगर है. उससे बच कर रहना.

आपने बुढ़िाया की बात सुन कर निहायत मुलाएमत से फरमायाः माई मैं ही वह मुहम्मद हूँ जिसके खौफ से तू मक्का छोड़ आई है. बुढ़िया ने जब यह सुना तो वह बहुत शरमिन्दा हुई और कहने लगी कि अगर आप मुहम्मद हैं तो मैं गवाही देती हूँ कि आप अल्लाह के नबी हैं. क्योंकि आप दुश्मनों के साथ भी अच्छा सुलूक रवा रखते हैं.

प्यारे बच्चो! वह बुढ़िया हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अख्लाको किरदार और हुस्ने सुलूक से इस कदर मुतअस्सिर हुई कि उसने अपना मज़हब छोड़ कर फौरन दीन इस्लाम क़बूल कर लिया. अच्छे अख्लाक की अहमियत का अन्दाज़ा इस हदीस से लगाओ.

"मीज़ाने अमल पर अच्छे अख्लाक से ज़्यादा
वज़नी कोई चीज़ न होगी".

مَا مِنْ شَيْءٍ أَثْقَلُ فِي الْمِيزَانِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ

(सुनन अबू दाऊदः 12/421हदीसः4166)

26

बात एक लकड़हारे की

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक लकड़हारा था जो जंगलों और पहाड़ों में जाकर लकड़ियाँ काटता. उनहें पीठ पर ढो कर लाता और बाज़ार में फरोख्त किया करता था. उससे थोड़ी बहुत जो आमदनी होती उसी पर उसका गुज़र बसर होता था. यह काम अगरचा बहुत सख्त और तकलीफ देह था. मगर लकड़हारा कभी उससे नालाँ और शिक्वा कुनाँ नहीं था.

फिर क्या हुवा कि उसके एक पड़ोसी ने भी यही काम शुरू कर दिया. मगर फर्क़ यह था कि उसके पास एक गदहा था. वह ज़्यादा लकड़ियाँ काट कर लाता और उससे कम क़ीमत पर बाज़ार में फरोख्त किया करता था. यह देख कर उसके अन्दर हसद की आग भड़क उठी.

वह सीधा हज़रत मूसा अलैहिस्सलातो वस्सलाम के पास गया और इस तरह अपनी परेशानी बयान करना शुरू कीः

आपको पता है कि मैं एक पेशावर लकड़हारा हूँ. अक्सर ऐसा होता है कि लकड़ियाँ काट कर जब मैं अपनी पीठ पर लादता हूँ तो बहुत से काँटे चुभ जाते हैं मुझे भी पुर सुकून

ज़िन्दगी जीने की तमन्ना है. बराए करम जब आप अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हों तो मेरी मुश्किल भी वहाँ रखदें और मेरे लिये एक गदहे की दरखास्त करदें जिस पर मैं लकड़ियाँ उठा कर बाज़ार लेजा सकूँ.

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से हम कलाम हुए तो आपने उस गरीब लकड़हारे की फरियाद अल्लाह के सामने पेश करदी.

जवाब मिलाः मूसा! यह बन्दा हसद की आग में जल रहा है. जब तक वह खुद को इस मुहलिक बीमारी से निजात नहीं दिलाएगा कभी भी चैन से नहीं रह सकता. उससे जाकर कह देना कि वह अपनी इस हरकत से बाज़ आजाए.

आज कल उस दूसरे लकड़हारे का गदहा बीमार है. इससे कहो कि यह अपने पड़ोसी के गदहे की शिफा के लिये दुआ करे. अगर वह ऐसा करता है और उसका गदहा ठीक होजाता है तो मैं उसे भी एक गदहा अता करदूंगा.

जब हज़रत मूसा ने आकर उस गरीब लकड़हारे से सारी तफसील बयान की तो उसके अन्दर मौजूद आतिशे हसद और तेज़ होगई. और कहने लगाः

मैं कभी भी अपने पड़ोसी के गदहे की शिफा के लिये अल्लाह से दुआ नहीं माँग सकता. जो कुछ मेरे पास है मैं

उसी में खुश हूँ. अब मुझे खुदा से किसी गदहे की तलब नहीं मैं तो यही दुआ करूंगा कि उसका गदहा कभी न ठीक हो. और यही मेरे लिये बहुत है.

प्यारे बच्चो! देखा तुमने कि हसद कितनी बुरी चीज़ है! जब यह बीमारी किसी के अन्दर मौजूद हो वह कभी भी खुश नहीं होता और हसद की आग में खुद जलता रहता है. हमारे आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कितनी उमदा नसीहत फरमाई है:

"हसद से बचो. क्योंकि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है".

اِيَّاكُمْ وَالْحَسَدَ فإنَّ الحَسَدَ يأكُلُ الحَسَنَاتِ

كَمَا تَأكُلُ النَّارُالحَطَبَ

(सुनन अबू दाऊदः13/56 हदीसः4257)

27

हातिम की सखावत

पहले ज़माने की बात है कि हातिम नामी एक बहुत ही मालदार और सखी शख्स था. उसके पास ज़िन्दगी की हर सहूलत बहम थी. जानवरों से भी उसे गहरा शगफ था. उसके पास "धुवाँ" नामी एक मशहूर चितकबरा घोड़ा भी था. जो उसकी आँख का तारा था और जिसे वह किसी क़ीमत पर छोड़ने के लिये तैयार न था. उसकी तेज़ रफ्तारी का चर्चा ज़बान ज़दे खासो आम था. लोग उसकी बर्क़ रफ्तारी की वजह से उसे शाहीन से ताबीर करते थे.

रफ्ता रफ्ता हातिम की सखावत और उसके खूबसूरत घोड़े की शोहरत उस दौर के बादशाह के कानों तक जा पहुँची. बादशाह ने अपने वज़ीर को बुलाया और कहा कि मैं हातिम की सखावत का इम्तिहान लेना चाहता हूँ. जाओ और उससे जाकर कहो कि बादशाह ने तुमहारा मशहूर घोड़ा "धुवाँ" माँगा है. देखो वह क्या करता है!.

दूसरे दिन बादशाह के कारिन्दे निकल पड़े और सख्त बादो बाराँ में हातिम के दरबार तक पहुँचे और उसके मेहमान बन गए.

हातिम ने उनका पुर जोश इस्तिक़बाल किया और खादिमों को हुक्म दिया कि मेहमानों के लिये खाने का इन्तेज़ाम किया जाए. जल्द ही खान चुन दिया गया. गोनागों क़िस्म की पुर तकल्लुफ डशें मेज़ पर सजा दी गई. और सभी लोग उसके इर्द गिर्द खाने के लिये बैठ गए. खाने के बाद मेहमानों को आराम देह बिस्तरों पर डाल दिया गया जहाँ उनहोंने मज़े की नींद ली.

दूसरे दिन जब मेहमानों ने अपनी आमद का मक़्सद बयान किया तो हातिम के होश उड़ गए. और मारे अफसोस के उसे समझ में नहीं अरहा था कि क्या करे.

उसने कहाः बड़े दुख की बात है. जिस वक़्त तुम लोग यहाँ आए उसी वक़्त बादशाह की खाहिश का बरमला इज़हार क्यों नहीं कर दिया!.

मुझे पता था कि तुम लोग घोड़े के गोश्त के बड़े शौक़ीन हो. और हुवा यह कि गुज़श्ता रात जब तुम यहाँ आए. तो मौसम की खराबी और सख्त बारिश की वजह से मेरे पास तुमहारी ज़्याफत के लिये कुछ भी नहीं था. चुनानचा गुज़श्ता रात मैंने तुमहारी खातिर मुदारात के लिये वही मशहूर घोड़ा''धुवाँ'' ज़बह कर डाला. क्योंकि उसके एलावा कोई और चारा ही न था.

प्यारे बच्चो! हातिम की यह सखावत अपनी जगह! मगर वह कभी हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सखावत की गर्द को भी नहीं पहुँच सकती. क्योंकि आपने एक आम आदमी को सौ ऊँट अता कर दिये थे. और बच्चो तुमहें पता है कि ऊँट अरब का सबसे क़ीमती सामान है. सखावत की अहमियत का अन्दाज़ा ज़ेल की हदीस से बआसानी लगाया जा सकता है:

"सखी अल्लाह से क़रीब होता है. जन्नत से क़रीब होता है, लोगों से क़रीब होता है(और) जहन्नम से दूर होता है".

السَّخِيُّ قَرِيبٌ مِنَ اللّٰهِ قَرِيبٌ مِنَ الجَنَّةِ

قَرِيبٌ مِنَ النَّاسِ بَعِيدٌ مِنَ النَّارِ

(सुनन तिरमिज़ी:7/222हदीस:1884)

28

कंजूसी की नहूसत

खालिद का तअल्लुक एक खाते पीते घराने से था. लेकिन उसका चचा बहुत ही कंजूस था. और तंगी की ज़िन्दगी जीता था. क्योंकि वह दौलत न अपने ऊपर सर्फ करता था और न किसी और ही को देता था. बस यही वह बात थी जिसके बाइस लोग उसे पसन्द नहीं करते थे और न कोई इज़्ज़त देते थे.

उसकी कोशिश होती थी कि जो कुछ उसके पास हो उसे अशरफियों में तब्दील कराले. क्योंकि वह अशरफियों को अपनी निगाहों के सामने देखना पसन्द करता था. एक दिन उसने वह सारी अशरफियाँ अपने बाग में दफन कर दीं. अब हर रोज़ वह बाग में जाता. अशरफियों को ज़मीन से निकालता. एक एक करके उनहें गिनता और फिर वापस वहीं ज़मीन में गाड़ देता था.

एक दिन जब वह बाग में गया तो उसे अशरफियाँ नहीं मिलीं. यक़ीनन किसी ने चोरी करली होंगी. अब वह गुस्से से पागल होरहा था. और समझ में नहीं आरहा था कि क्या करे.

जब खालिद को इस हादसा की खबर हुई तो वह अपने कंजूस चचा से मिलने के लिये गया और कहाः

जो पैसे चले गए चले गए. उन पर आँसू बहाने से कोई फाएदा नहीं. वह आपके नहीं थे. अगर वह आपके होते तो आप उनहें बाग में लेजाकर कभी ज़ेरे ज़मीन दफन नहीं करते. बल्कि अपने मुफीद कामों में उसे इस्तेमाल करते. इससे लोगों की ज़रूरतें पूरी करते और अवाम व खास में इज़्ज़त कमाते.

प्यारे बच्चो!कंजूसी कितनी बुरी चीज़ है उसका अन्दाज़ा इससे लगाओ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने उससे अल्लाह की पनाह चाही है. नीज़ आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम फरमाते हैंः

"कंजूस अल्लाह से दूर होता है, जन्नत से दूर होता है, लोगों से दूर होता है(और)जहन्नम से क़रीब होता है".

البَخِيُلُ بَعِيدٌ مِنَ اللّٰهِ بَعِيدٌ مِنَ الجَنَّةِ
بَعِيدٌ مِنَ النَّاسِ قَرِيبٌ مِنَ النَّارِ .

(सुनन तिरमिज़ीः7/222हदीसः1884)

29

एक रोटी

सख्त ठंडी पड़ रही थी. और हसन बैकरी से कुछ रोटियाँ खरीद कर घर वापस लौट रहा था. अचानक उसकी निगाह एक मिस्कीन और कमज़ोर कुत्ते पर पड़ गई. वह इतना लागर था कि उसकी सारी पसलियाँ एक एक करके गिनी जासकती थीं.

कुत्ते कि निगाह जब हसन के झोले में पड़ी रोटी पर पड़ी तो वह ललचाइ हुई निगाहों से देखता रह गया और ज़बान चलाने लगा.

यह कैफियत देख कर हसन का दिल रहम व मुरव्वत से भर आया. उसने कुत्ते पर तरस खाते हुए अपने आपसे कहा: अगर मैं एक रोटी इस भूके कुत्ते को देदेता हूँ तो मेरी माँ मुझ पर यक़ीनन नाराज़ होगी. मगर फिर उसने फैसला किया कि चलो ज़रा देर के लिये माँ की डाँट सुन लेंगें. लेकिन इस कुत्ते का पेट तो भर जाएगा. यह ख्याल आते ही उसने झोला ज़मीन पर रखा और उसके अन्दर से रोटी निकाल कर उसे तोड़ने लगा ताकि रोटी के छोटे टुकड़े कुत्ता बआसानी खा

सके.

हसन के पीछे एक दूसरा शख्स भी इत्तेफाक़ से बैकरी ही से आरहा था उसने हसन की बातें सुन ली थीं तो उसने चुपके से एक रोटी ज़मीन पर पड़े हसन के झोले में डाल दी.

कुत्ते को खिला कर हसन ने अपना झोला उठाया और लेकर घर पहुँचा. लेकिन उस वक़्त उसकी हैरत की इन्तिहा न रही जब उसने देखा कि झोले के अन्दर पूरी उतनी ही रोटियाँ हैं जितनी उसने बैकरी से खरीदी थीं.

प्यारे बच्चो! काश हसन को प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम की यह हदीस मालूम होती तो उसे फैसला करने में इतनी देर न होती और वह खुशी खुशी वह काम कर गुज़रता. हदीस में है:

"सदका और खैरात करने से कभी
माल में कमी नहीं आती".

مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ .

(सही मुस्लिम: 12/474 हदीस: 4689)

30

सदाए बाज़ गश्त

रमज़ी एक शरीर बच्चा था और उसे हमेशा शरारत की सूझी रहती थी. उसका बाप किसी मैदान में काम कर रहा था. एक दिन वह अपने बाप का खाना लेकर चला. चोटी के ऊपर चट्टान के पीछे उसे एक साया नज़र आया. उसने समझा हो नहो ऊपर कोई बच्चा ज़रूर होगा जिसका वह साया पड़ रहा है. उसने ज़ोरसे चीख लगाईः है!!!!.चोटी के ऊपर से भी एक आवाज़ आईः है!!!!.

रमज़ी को पता नहीं था कि यह सदाए बाज़ गश्त है और मेरी अपनी ही आवाज़ पहाड़ से टकरा कर वापस आरही है. उसने समझा कि वह बच्चा चोटी के ऊपर है जहाँ से वह मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा है. उसने गुस्सा में लाल पीला होकर कहाः''घबराओ नहीं बस मेरे आने का इन्तेज़ार करो, देखो मैं ऊपर आकर क्या करता हूँ''.

ऊपर से आवाज़ आईः''घबराओ नहीं बस मेरे आने का इन्तेज़ार करो. देखो मैं ऊपर आकर क्या करता हूँ''.

अब तो रमज़ी गुस्से में बेक़ाबू होने लगा था और पूरा

ज़ोर लगा कर कहा:

ऐ बुज़ दिल! हिम्मत है तो बाहर निकलो और आकर मुझसे मुकाबला करो.

जब बिल्कुल यही जवाब उसके कानों में पड़ा तो वह बेताब होकर चोटी पर चढ़ने लगा. थोड़ी ही देर में थक कर चूर होगया. मगर उसे वहाँ कोई नज़र नहीं आया. उसने समझा हो नहो वह बच्चा कहीं और जाकर छुप गया होगा. चुनानचा वह चट्टान के ऊपर चढ़ गया और चारों तरफ आवाज़ लगाने लगा और दिल ही दिल में सोच रहा है कि अगर वह बच्चा मिल गया तो मैं उसका बुरा हाल कर दूंगा. मगर वह बुज़ दिल बच्चा. रमज़ी के सामने आने की हिम्मत न कर सका.

बहुत देर के बाद रमज़ी को अपने बाप की याद आई कि अब तक तो भूक से उसका बुरा हाल होगया होगा. वह सीधा अपने बाप के पास पहुँचा और उसने सारा क़िस्सा अपने बाप को कह सुनाया. उसके बाप ने उसे एक मुहावरा सुनाया.

'वह शख़्स जो अपनी मन चाही दूसरों को सुनाना चाहता है, उसे वह कुछ सुनना पड़ता है जिसे वह सुनना नहीं चाहता'.

प्यारे बच्चो! अगर रमज़ी को हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम की यह हदीस याद रही होती तो वह अपने आप पर इस तरह बेजा ज़ुल्म न करता:

"जो शख्स अल्लाह और रोज़े आखेरत पर ईमान रखता है तो उसे चाहिये कि वह ज़बान से अच्छी बात निकाले या फिर खामूश रहे".

مَنْ كَانَ يُؤمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَومِ الاٰخِرِ
فَلْيَقُلْ خَيْرًا أوْ لِيَصْمُتْ

(सही बुखारी: 18/437 हदीस:5559)

31

झूट की शामत

एक दिन एक औरत और मर्द अपना एक मोकदमा लेकर कोर्ट में पहुँचे. जज आया और समाअत शुरू होगई. पहले औरत ने अपना बयान दिया और अपने बगल में खड़े लागर से मर्द की तरफ उँगलियों से इशारा करते हुए कहा कि इसने मेरी आबरू पर हमला किया है और मेरी इज़्ज़त खाक में मिला कर रखदी है.

मर्द ने अपना देफा करते हुए कहा: यह झूट बोल रही है. सच्ची बात यह है कि अपनी बकरियाँ बेचने के बाद मैं पैसों की गिनती में लगा हुवा था कि इतने में यह आई. और पैसा देख कर अपनी नीयत' खराब कर बैठी. फिर उसने मुझे धमकी देना शुरू करदी कि अगर तुम मुझे यह पैसे नहीं देते तो मैं तुमहारे लिये बड़े मसाएल खड़ी करदूंगी. जब मैंने पैसे देने से इनकार कर दिया तो इसने रोना धोना शुरू कर दिया.

दोनों का बयान सुनने के बाद जज इस नतीजे पर पहुँच गया कि कौन झूटा है और कौन सच्चा. मगर इसके बावजूद उसने कहा कुछ नहीं. थोड़ी देर के बाद जज. मर्द की तरफ मुतवज्जह हुवा और गुस्से से कहा कि तुमने इस बेचारी पर

हमला करके इसकी इ़ज़्ज़त. खाक में मिलादी और फिर मेरे पास झूट का पुलिन्दा लेकर आए हो. खैरियत इसी में है कि जो कुछ पैसे तुतहारी जेब में हैं सब इस औरत के हवाले करदो. वरना तुमहें हवालात की नज़र कर दिया जाएगा.

यह सुन कर हर शख़्स हैरत में पड़ गया. क्योंकि वह सोच भी नहीं सकते थे कि जज का रद्दे अमल कुछ ऐसा होगा. बहर हाल! औरत ने खुशी खुशी मर्द से पैसे वसूल किये. और जज की तारीफ करते हुए कोर्ट से बाहर चली गई. औरत के बाहर निकलते ही जज ने मर्द से कहा कि जाओ इसका पीछा करो और जिस तरह भी होसके अपने पैसे इससे वापस लेने की कोशिश करो.

यह सुन कर मर्द एक बार फिर चौंका. मगर चूंकि जज का हुक्म था. इस लिये जल्दी से निकल खड़ा हुवा. इस उम्मीद पर कि शायद पैसे वापस मिल जाएँ.

अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि दोनों फिर कोर्ट में पेश किये गए. लेकिन इस बार उस मर्द का बुरा हाल था. क्योंकि उसके चेहरे से खून बह रहा था. कपड़े फटे हुए थे और जिस्म कई जगह ज़ख्मी होगया था.

औरत ने गज़बनाक लहजे में पहले अपनी सफाई देनी शुरू की कि जज साहब! जो पैसे आपने मुझे दिलवाए थे यह बेरहम इनसान मुझसे वह छीनने की कोशिश कर रहा था.

जज ने उससे पूछाः क्या इसने उसे छीनने की कोशिश

की थी?.

औरत ने कहाः बिल्कुल. लेकिन मैने इसमें से इसे एक आना भी लेने न दिया. यह सुन कर जज औरत की तरफ मुतवज्जह हुवा और उसे डाँटते हुए बोलाः

बेशरम झूटी औरत! तुम पहली मरतबा एक शरीफ औरत की तरह किस तरह दावा कर रही थी कि इस मर्द ने तुम पर हमला किया है. अगर वह बात वाकेअतन सच्ची होती तो तुम इन पैसों के मुक़ाबले में अपनी इज़्ज़त व नामूस के बचाव के लिये ज़्यादा बेजिगरी से लड़ती. क्योंकि यह पैसे तो तुमहारे थे भी नहीं. और तुमने इनहें बचाने के लिये इस मर्द को लहू लहान कर दिया. यह काम तो तुमको पहले करना था. यही तुमहारे झूट के लिये काफी है. अब खैर इसी में है कि तुम जल्दी से इस आदमी के पैसे इसके हवाले करदो.

प्यारे बच्चो! क़ब्ल इसके कि औरत अपनी सफाई के लिये कोई उज़्र पेश करती. जज ने उसे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह हदीस सुनादीः

"झूट बोलने से बचो क्योंकि झूट बदी की राह दिखाता है और बदी जहन्नम में ले जाती है".

إِيَّاكُمْ وَالكَذِبَ فَإِنَّ الكَذِبَ يَهْدِي إِلَى الفُجُورِ
وَإِنَّ الفُجُورَ يَهْدِيْ إِلَى النَّارِ.

(सही मुस्लिमः13/16हदीसः4721)

32

सच्चाई की जीत

फहमी एक गरीब इनसान का बेटा था. मगर एक अच्छे माहौल में उसकी तरबियत हुई थी. माँ बाप चूंकि नेक और शरीफ थे इस लिये सच्चाई और दयानतदारी फहमी की घुट्टी में पड़ी थी.

एक दिन ऐसा हुवा कि मदरसा से लौटते वक़्त फहमी अपना कलम कहीं खो बैठा. इधर उधर बहुत तलाश किया. मगर कहीं वह क़लम न मिला. बिलआखिर इसी गम में वह गली के एक किनारे पर बैठ कर रोने लगा.

एक खुश लेबास आदमी जब वहाँ से गुज़रा तो बच्चे को रोता हुवा देख कर वह रुक गया और और उससे रोने का सबब दरियापत करने लगा. जब उस शरीफ आदमी को फहमी का मस्अला मालूम हुवा तो उसने अपनी जेब से एक क़लम निकालते हुए पूछा. तुमहारा गुमशुदा क़लम यह तो नहीं है?.

फहमी ने रोते हुए जवाब दियाः नहीं यह नहीं है. मेरा क़लम इतना खूबसूरत और इतना अच्छा नहीं था!.

शरीफ आदमी ने फहमी की तारीफ करते हुए कहाः चूंकि तुम एक इमानदार बच्चे हो और तुमने मुझसे सच सच बताया है. लिहाज़ा सिले में तुमहें यह क़लम दिया जारहा है. इसे क़बूल करलो. और खुशी खुशी घर जाओ.

प्यारे बच्चो! तुमने देखा कि सच्चाई की जीत कैसे हुई. और सच बोलने के नतीजे में उसे क्या इनाम मिला. इसी लिये तो हमारे प्यारे नबी हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने हमें सच बोलने की नसीहत फरमाई हैः

"सच बोलने की आदत बनाओ क्योंकि
सच्चाई नेकी की राह दिखाती है और नेकी
जन्नत में ले जाती है".

عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ
وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ .

(सही मुस्लिमः13/16हदीसः4721)

33

गुनाह क्या है?

रमज़ान के मुबारक दिन थे. और करीम. इफ्तार की तैयारी करने के लिये बाज़ार से कुछ सौदा सुलफ खरीदने जारहा था. जब दुकान पर पहुँचा तो वहाँ एक लम्बी क़तार लगी हुई थी. जैसे जैसे इफ्तार का वक़्त क़रीब आता जारहा था लोगों की बेचैनी के साथ भीड़ भी बढ़ती जारही थी.

दुकानदार खुद भी मुसलमान था. इस लिये लम्बी क़तार देख कर वह भी फिक्रमन्द था और उनहें जल्दी जल्दी फारिग करने की कोशिश कर रहा था. जब करीम की बारी आई तो इफ्तार का वक़्त बिल्कुल सर पर आचुका था. और दुकानदार उस वक़्त तक ज़ेहनी तौर पर बिल्कुल ही थक चुका था. करीम ने पचास रूपये का सौदा खरीदा और सौ की नोट दुकानदार को दी. मगर बजाए उसके कि करीम को पचास वापस मिलते दुकानदार ने उस से बहुत ज़्यादा रूपये करीम को लौटाए. पहले तो करीम को हिचकिचाहट महसूस हुई और उसने तअज्जुब भरी निगाहों से दुकानदार के चेहरे पर देखा.

दुकानदार ने पुछाः कोई बात तो नहीं है?.

करीम नफी में जवाब देता हुवा रूपये लेकर चल पड़ा. जब रात खाने पर बैठा तो वह बड़ा फिक्रमन्द और अन्दर से टूटा हुवा था. रात जब सोने के लिये बिस्तर पर गया तो

उसकी ज़ेहनी कूफुत और बढ़ गई. उसने महसूस किया कि जैसे कोई नादीदा इनसान मेरे ज़मीर को झिनझोड़ कर मुझसे पूछ रहा है:

''करीम! तुमने यह हरकत क्यों की?.वह रूपये चुपके से रख लेने का तुमहें किसने हक़ दिया था जो असलन तुमहारे थे ही नहीं!''.

करीम ने सोचा कि अब माँ से चल कर सारी दास्तान कह देता हूँ. मगर फिर उसने फौरन इरादा बदल लिया और माँ से कोई बात न बताई. क्योंकि उसे पता था कि माँ मेरी यह हरकत सुन कर गुस्से से लाल पीली होजाएगी. पूरी रात वह यूंही बेचैनी में करवटें बदलता रहा. किसी पहलू नींद नआई. और फिर सुबह उठ कर भी वह चैन की साँस न लेसका.

प्यारे बच्चो! फिर क्या हुवा कि बेकरारी में करीम की निगाह दीवार पर लगे कैलेंडर पर चली गई जहाँ उसे आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की एक हदीस लिखी नज़र आई जिसे पढ़ कर वह और बेक़रार हुवा फिर जाकर ज़ाएद रूपये दुकानदार के हवाले कर दिये. वह हदीस पाक यह है:

''वह अमल' गुनाह है जो तुमहारे दिल को मुज़तरिब रखे,
और तुम लोगों से उसे बताना भी पसन्द न करो''.

الإِثْمُ مَا حَاکَ فِي صَدْرِکَ وَ کَرِهْتَ أَنْ يَّطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ .

(सही मुस्लिम:12/403हदीस:4632)

34

पड़ोसी का ख्याल

वसीम एक हूनहार लड़का था. मालदार घराने में उसने आँखें खोली थीं. उसका बाप उस दौर का बहुत बड़ा ताजिर था. इस लिये वसीम को उसकी मन चाही सारी चीज़ें बआसानी मिल जाती थीं. मगर उसे यह पता न था कि मुफलिस और बेसहारा लोग कैसे ज़िन्दगी गुज़ारते हैं!.

एक दिन की बात है कि वह घर से जैसे ही फुट्बाल खेलने के लिये निकला एक कुत्ते ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया. उसने ज़ोर की दौड़ लगाई. मगर कुत्ते से तेज़ तो नहीं दौड़ सकता था. नाचार कुत्ते ने उसे एक तंग रास्ते पर घेर लिया वसीम ने जान बचाने के लिये जस्त लगाई. और एक पत्थर से टकरा कर लहू लहान हो गया. देर तक यूंही बेहोशी के आलम में पड़ा रहा.

जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसने अपने रूबरू अपनी ही उम्र का एक लड़का देखा और उस लड़के की माँ मेरे ज़ख्म पर मरहम पट्टी कर रही थी. उनहोंने मुझे कुत्ते के चंगुल से बचाया और ज़ख्म की सफाई के लिये अपने घर लेकर चले गए.

वसीम ने तहे दिल से उनका शुक्रिया अदा किया. उनके खस्ता घर और मामूली क़िस्म के सामाने ज़िन्दगी देख कर वसीम हैरत में पड़ गया. जब खाने का वक़्त आया तो उनका खाना देख कर उसे वहशत होने लगी और एक लुकमा भी उसकी हलक़ से नीचे न उतर सका.

दूसरे दिन वसीम जब घर आया तो उसने अपनी माँ से फरमाइश करके कुछ उमदा खाने बनवाए. जिनहें लेकर वह उस लड़के के घर गया और उनके साथ बैठ कर खाया. अब उसे महसूस हुवा के जैसे कुछ खारहा है. फिर जल्द ही वह आपस में एक दूसरे के गहरे दोस्त बन गए.

प्यारे बच्चो! वसीम एक रहम दिल और मेहरबान किस्म का लड़का था इसी लिये तो उसने उन मफ्लूकुलहाल लोगों के साथ फरमाने पैगम्बर के मुताबिक सुलूक किया.

"वह मोमिन ही नहीं जो खुद तो पेट भर कर सो रहे और उसके बगल में उसका पड़ोसी भूका रहे".

لَيْسَ بِالْمُؤْمِنِ الَّذِيْ يَبِيْتُ شَبْعَاناً

وَجَارُهُ جَائِعٌ إِلٰى جَنْبِهِ .

(मुस्तदरक हाकिम:5/270हदीस:2126)

35

चोर पर अल्लाह की फटकार

नूरी एक संजीदा. शरीफ और सादा क़िस्म का किसान था. मगर उसकी सादगी देख कर लोग यह समझते थे कि वह एक बेवकूफ इनसान है. क्योंकि वह सिर्फ अपने काम से काम रखता है और किसी के मामले में मुदाखेलत नहीं करता था. मगर यह कि कोई ज़रूरत आन पड़े.

एक दिन ऐसा हुवा कि एक ऐसे शख्स ने नूरी का गदहा चोरी कर लिया जो बड़ा चर्ब ज़बान था और जिसकी अक़लमन्दी की लोग दाद दिया करते थे. नूरी ने देखा कि गदहा तो चला गया और उसके बगैर कोई काम भी नहीं चल रहा तो फिर एक दूसरा गदहा लेने के इरादे से वह बाज़ार की तरफ निकल पड़ा.

बाज़ार में घूमते घूमते वह एक ऐसी जगह जा पहुँचा जहाँ खुद उसका अपना गदहा फरोख्त के लिये बंधा हुवा था. वह दुकानदार के पास गया और कहा: यह तो मेरा गदहा है. गुज़श्ता हफ्ता किसी ने मेरे घर से चोरी कर लिया था. तुमहें

कहाँ से मिला?. चोर एक बेगैरत क़िस्म का इनसान था. उसने बेहयाई से जवाब दिया:

"शायद पहचानने में आपको गलती होगई है. मैंने इस गदहे को बच्चा खरीदा था और इसे पाल पोस कर इतना बड़ा किया है".

जब नूरी ने चोर की यह बात सुनी तो फौरन उसके ज़ेहन में एक आइडिया आया. उसने अपनी गरदन में बंधे रूमाल को लिया और गदहे को ओड़हा कर कहा:

अगर यह वाकेअतन तुमहारा गदहा है तो बताओ कि इसकी कौन सी आँख कानी है?.

एक लमहे के लिये चोर हिचकिचाया फिर जवाब दिया: इसकी दाईं आँख.

नूरी ने गदहे की दाईं आँख खोली और कहा कि देखो कि यह दाईं आँख से बिल्कुल सही देख रहा है. चोर ने कहा: ओह! माफ करना. मुझे मुशाबहत लग गई थी. दर अस्ल इसकी बाईं आँख कानी है नूरी गदहे की बाईं आँख खोलते हुए कहा कि "एक बार फिर तुमने गलती की". यह गदहा काना था ही कब!.

यह देख कर लोग जहाँ नूरी की अकलमन्दी का क़सीदा

पढ़ रहे थे वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग चोर की अच्छी तरह खबर भी लेरहे थे.

प्यारे बच्चो! देखो हमारे आक़ा अलैहिस्सलाम ने हमें क्या तालीम दी है:

"जब चोर चोरी करता है तो ईमान उससे
दूर चला जाता है".

لاَ يَسْرِقُ السَّارِقُ حِيْنَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

(सही बुखारी:21/37हदीस:6284)

36

तकब्बुर की आदत

आलिया एक बहुत ही मगरूर. और घमंडी क़िस्म की लड़की थी. लेकिन जब उसके बाप का इन्तेक़ाल होगया तो उस पर उसका बड़ा गहरा असर पड़ा. वह हमेशा अपने बाग में तने तनहा खेला करती थी. मुहल्ले की किसी लड़की से उसका कोई रब्त ज़ब्त नहीं था हत्ता कि बगल के घर वाली बदरिया से भी वह बात चीत नहीं करती थी. बदरिया का क़सूर यह था कि वह गरीब घर में पैदा हुई थी.

एक दिन बदरिया दौड़ती हुई आलिया के बाग में आई और कहने लगी: आलिया! मेरे वालिद सख्त बीमार हैं. किसी लमहे उनका दम निकल सकता है. न मालूम क्यों वह इस आलम में तुमसे मिलना चाहते हैं. वह तुमसे कोई अहम वसीयत करना चाहते हैं.

आलिया ने वही अपने मगरूराना अन्दाज़ में कहा:

तुमहारे बाप की तरह मुफलिस आदमी से क्या किसी अहम बात की तवक़्क़ो रखी जा सकती है!. और फिर तुमहारे घर से ऐसी बदबू फूटती है कि कोई इज़्ज़तदार इनसान उसके क़रीब भी जाना नहीं चाहेगा.

बदरिया ना उम्मीद होकर चली गई मगर थोड़ी ही देर के बाद फिर भीगी पलकों के साथ आई और आकर कहने

लगीः

मेरे वालिद वाक़ेअतन कोई अहम बात तुमसे कहना चाहते हैं. असल में तुमहारे बाप ने अपनी मौत से थोड़ी देर कब्ल कुछ सोना कहीं दफन कर दिया था और उस राज़ की खबर मेरे वालिद के एलावा किसी को नहीं है. तुमहारे बाप ने मेरे वालिद से कहा था कि आलिया जब तक बड़ी न होजाए उस वक़्त तक उससे यह राज़ नहीं बताना. लेकिन चूंकि अब उनके चल चलाव का वक़्त आगया है तो वह चाहते हैं कि तुमको उससे आगाह करदें. बराय करम जल्दी करो.

बदरिया की बात सुन कर आलिया दौड़ पड़ी. मगर बहुत देर होचुकी थी और वह मुफलिस आदमी मौत की आगोश में सो चुका था. आलिया को अपनी हरकत पर बहुत गुस्सा आया और वह खुद को कोस रही थी.

प्यारे बच्चो! आलिया ने क्या सिर्फ सोना ही खोया. नहीं बल्कि उसने अपने गोरूर व घमंड की पुरानी आदत की वजह से जन्नत पाने का मौक़ा भी गँवा दिया. प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कितना अच्छा पैगाम उम्मतियों को दिया हैः

"वह जन्नत में नहीं जा सकता जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी घमंड हो".

لاَ يَدْخُلُ الجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ
مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ كِبْرٍ .

(सही मुस्लिमः1/247हदीसः131)

37

मुक़ाबला

हसन एक ज़हीन लड़का था. बद क़िस्मती से एक कार हादसे में उसकी दोनों आँखें जाती रहीं. मगर वह कभी अपनी ज़िन्दगी से बेज़ार नहीं हुवा. हर दिन उसकी कोशिश यही हुवा करती थी कि किसी पर बोझ बने बेगैर वह ज़िन्दगी की कश्ती को आगे बढ़ाता रहे. अकसर ऐसा होता कि वह किसी का सहारा लिये बेगैर बज़ाते खुद गाँव से शहर और शहर से गाँव जाता और चला आता था.

उसी गाँव में मुर्तुज़ा नामी एक शरीर लड़का भी रहता था. एक दिन मुर्तुज़ा को दिल लगी सूझी और उसने हसन का मज़ाक़ उड़ाने के लिये गाँव से शहर जाने की बाज़ी लगाली.

हसन ने मुक़ाबला क़बूल करते हुए कहा कि कोई बात नहीं मगर मेरी एक शर्त है कि अगर मैं बाज़ी मार लेगया तो तुमहें अपनी कोट मेरे हवाले करना होगी.

यह सुन कर मुर्तुज़ा हंसा और कहा ठीक है. अगर जीत गए तो यह कोट तुमहारी.

हसन ने एक और शर्त का इज़ाफा किया कि वक़्त का

इन्तेखाब भी मैं करूँगा.

मुर्तुज़ा तो यह समझ रहा था कि चूंकि हसन कभी भी यह बाज़ी नहीं जीत सकता इस लिये उसने हाँ कर दिया. हसन ने कहा कि यह मुकाबला खप अंधेरी रात में होगा.

शहर का रास्ता एक घने जंगल से होकर गुज़रता था. हसन के लिये चूंकि रात दिन बराबर थे तो वह अपने मामूल के मुताबिक़ शहर पहुँच गया. जब कि मुर्तुज़ा जंगल में उलझ कर रह गया. गड्ढों में गिर गिर कर अपना बुरा हाल कर लिया. और दरख्त की शाखों ने उसके चेहरे का नक़्शा बिगाड़ कर रख दिया. जब वह शहर पहुँचा तो देखा कि हसन उस से आधे घंटे पहले ही शहर में पहुँच चुका है.

प्यारे बच्चो! काश बेचारे मुर्तुज़ा को आक़ा अलैहिस्सलातो वस्सलाम की यह हदीसे कुद्सी याद होती तो वह अपने आपको इतनी मुश्किलों से हमकिनार न करता:

"अल्लाह तआला ने मेरी तरफ वही की कि (लोगो!) इज्ज़ व इंकेसार को अपना शेवा बनाओ और किसी को हक़ नहीं पहुँचता कि किसी पर फख्र और बड़ाई जताए".

إِنَّ اللّٰهَ أَوْحىٰ إِلَيَّ أَنْ تَوَاضَعُوا حَتّٰى
لاَ يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلٰى أَحَدٍ .

(सही मुस्लिम: 14/24 हदीस: 5109)

38

पहेलवान कौन!

हलीम बड़ा शहज़ोर क़िस्म का बच्चा था. उसकी ताक़त का अन्दाज़ा इससे लगाओ कि वह एक हाथ से बड़ा बड़ा स्टूल सीधा उठा लेता था. पूरे स्कूल में कोई भी उसे कुश्ती में मात नहीं दे सकता था. वह अकसर व बेशतर अपने दोस्त नूरैन के साथ कुश्ती लड़ा करता था.

एक दिन की बात है कि हलीम और नूरैन दोनों स्कूल के सेहन में कुश्ती लड़ने लगे. नूरैन ने बहुत कोशिश की मगर बिलआखिर वह कुश्ती हार गया.

मारे गुस्सा के वह क्लास रूम में गया और हलीम की सारी किताबें उसके बस्ते से निकाल कर छींट दीं.

नूरैन की यह हरकत देख कर हलीम गुस्से से पागल होने लगा. अपने गुस्से पर क़ाबू न पाकर वह नूरैन के ऊपर कूद पड़ा और उसकी नाक पर एक घूंसा लगा दिया. नूरैन की नाक से खून का फव्वारा बहने लगा. सारा कपड़ा और दर्सगाह का फर्श सुर्ख सुर्ख होगया.

उसकी हम जमाअत साथियों ने जब उसकी यह हरकत

देखी तो उनहें बहुत दुख हुवा और प्रिंसपल से जाकर शिकायत करदी.

प्यारे बच्चो! प्रिंसपल ने हलीम को बहुत डाँटा और उसे उसकी हरकत पर तम्बीह करते हुए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम की यह हदीस बयान की:

"ताकतवर वह नहीं जो अखाडे में अपने मुकाबिल को पछाड़ दे बल्कि ताकतवर वह है जो गुस्से के वक़्त अपने आप पर क़ाबू पाले".

لَيُسَ الشَّدِيُدُبِالصُّرَعَةِ إِنَّمَا الشَّدِيُدُ
الَّذِيُ يَمُلِكُ نَفُسَهُ عِنُدَالغَضَبِ

(मुअत्ता इमाम मालिक:5/392हदीस:1409)

39

बेल्ट की कहानी

नबील बहुत ही ज़िद्दी और शरीर बच्चा था. सारे भाइयों को परेशान रखना और उनहें मारते पीटते रहना उसका मशगला था. हमेशा गुस्ताखाना लहजे में इनसे उनसे झगड़े वाली बातें करता. उसकी यह हरकतें देख कर उसकी माँ को बहुत गुस्सा आता था. अक्सर आबदीदा होजाती फिर उसे प्यार से समझातीः

प्यारे बच्चो! दूसरों के एहसासात को ठेस न पहुँचाओ. और उनसे कभी सख्त व करख्त लहजे में गुफ्तगू न करो. यह सब बुरी बातें हैं.

लेकिन नबील अपनी हरकतों से कहाँ बाज़ आने वाला था. वह अपनी गलती मानने के लिये कभी तैयार ही न था. वह कहता कि उनहोंने मुझे गुस्सा दिलाया तो मैंने उनके साथ ऐसा सुलूक किया. इसमें मेरा क्या क़सूर है!.

एक दिन उसकी माँ ने कहा कि अगर आज शाम तक तुम किसी से लड़े झगड़े नहीं तो मैं तुमहें वह बेल्ट खरीदूंगी जिसकी तुम मुझसे फरमाइश किये जारहे हो.

नबील का उस बेल्ट पर दिल आगया था और वह उसे हर हाल में लेना चाहता था. अब उसके भाई उसे लाख गुस्सा दिला रहे हैं मगर वह बफरने और गुस्सा होने को तैयार नहीं. क्योंकि उसने फैसला कर लिया था कि कुछ भी होजाए अपने गुस्से को क़ाबू में रखना है.

जब शाम हुई तो उसकी माँ ने उसे बुलाया और कहा बेटे नबील! जिस तरह तुमने एक बेल्ट के लिये अपने गुस्से को कंट्रोल कर लिया इसी तरह अल्लाह की रज़ा के लिये भी ऐसा करो. देखो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम ने गुस्सा पर क़ाबू रखने वालों के लिये कितने अज़ीम इनाम का वादा फरमाया है:

"जो हक पर होने के बावजूद किसी से बदला न ले (अपने गुस्से को क़ाबू में रखे) उसके लिये जन्नत के बीचों बीच एक महल तामीर किया जाएगा".

مَنْ تَرَكَ الْمِرَاءَ وَ هُوَ مُحِقٌّ
بُنِيَ لَهُ فِي وَسَطِ الْجَنَّةِ .

(सुनन तिरमिज़ी:7/271हदीस:1916)

[40]

नेकी का बदला

एक नेक बादशाह रात को भेस बदल कर गश्त किया करता था. ताकि लोगों का असली हाल देख कर जहाँ तक होसके उनकी तकलीफें दूर कर दिया करे.

जाड़े के मौसम में वह एक रात शहर के बाहर किसी वीरान मकान के पास से गुज़र रहा था कि दो आदमियों के बोलने की आवाज़ आई. कान लगा कर सुना तो एक आदमी कह रहा था: लोग बादशाह को खुदा तर्स कहते हैं. मगर यह कहाँ की खुदा तर्सी है कि वह तो अपने महलों में नरम व गरम बिस्तरों पर सोरहा हो और मुसाफिर जंगल की इन बर्फानी हवाओं में मरें. खुदा की क़सम! अगर क़यामत के दिन वह बहिश्त में भेजा गया तो मैं उसे कभी न जाने दूंगा.

दूसरे ने कहा: अरे भाई! हुकूमत में खुदा तर्सी कहाँ?. यह खुशामदियों की बातें हैं. यह सुन कर नेक बादशाह वापस चला आया और महल में पहुँच कर हुक्म दिया कि दो गरीब मुसाफिर जो शहर के बाहर फलाँ जगह पड़े हुए हैं उनहें इसी वक़्त लेआओ और खाना खिला कर आराम से सुला दो.

चुनानचा फौरन हुक्म की तामील हो गई.

सुबह जब दिन चढ़ा तो बादशाह ने मुसाफिरों को बुला कर कहाः भाइयो! शहर के बाहर तुमहें तकलीफ तो ज़रूर हुई. मगर यह तुमहारा क़सूर था कि ग्यारह बजे रात तक भी शहर में न आए और दरवाज़ बन्द होगया. फिर भी मैंने आज शहर के बाहर एक सराय बनाने का हुक्म देकर तुमसे सुलह करली है. उम्मीद है कि तुम भी अब क़यामत के दिन मुझसे दुशमनी न रखोगे.

मुसाफिरों ने शरमिंदगी से सर नीचा कर लिया और बादशाह की नेकी के गीत गाते हुए अपने घरों को चले गए.

''जो किसी मोमिन की कोई दुनियाँवी तकलीफ दूर करे.
अल्लाह तआला अर्सा क़यामत की उसकी
बड़ी मुश्किलें आसान फरमा देगा''.

مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا
نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَومِ القِيَامَةِ

(सही मुस्लिमः13/212हदीसः4867)

चालीस हदीसें! क्या और क्यों?

जमा व तदवीने कुरआन के बाद अहादीसे नबवीया के हिफ्ज़ व ज़ब्त पर जिन अस्बाब व अवामिल ने सहाबा व ताबईन को आमादा किया इनमें उन बशाराते मुस्तफवी का भी एक खास मक़ाम रहा है जिनकी वजह से उलमाए उम्मत के लिये चमनिस्ताने अहादीस के गुल पारों और बहरे आसार के कतरों को महफूज़ करना एक अहम इल्मी वज़ीफा और दीनी खिदमत बन गया. मस्लन :

> अल्लाह उस शख्स को शाद व आबाद रखे जो मेरी हदीस सुन कर इसे याद करे और फिर पूरी ज़िम्मेदारी से इसे दूसरों तक पहुँचा दे......मेरा जो कोई उम्मती दीनी मुआमिलात से मुतअल्लिक़ चालीस हदीसें याद करले तो अल्लाह तआला उसका हश्र अरबाबे इल्म व फिक़्ह के साथ फरमाएगा.

यूंही फक़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी ने 'बुस्तानूल आरिफीन' में हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्हो की रिवायत से हुजूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम का इरशाद नक़ल किया है कि चालीस हदीसों को अगर कोई अज़बर (हिफ्ज़)करले तो यह उसके हक़ में चालीस हज़ार दिरहम सदक़ा करने से बेहतर है. और बाज़ रिवायात में यूंहै कि अल्लाह तआला हर हदीस के बदले क़यामत के दिन उसे नूर अता फरमाएगा.

हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी अलैहिर्रहमा हदीस " مــن حـفـظ عـلـی اُمتـی "के तहत रक़म तराज़ हैं:''उलमाए केराम फरमाते हैं कि हुजूरे अकदस सल्लल्लाहो अलैहे वआलिही वसल्लम के इस इरशाद से मुराद व मकसूद लोगों तक चालीस अहादीस का पहुँचाना है. चाहे वह उसे याद न भी हों और उनका माना भी उसे मालूम नहो. (अशअतुल्लमआत. मुतरजिम:1/186)

मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलिही वसल्लम ने चालीस हदीसों के हिफ्ज़ व नक़ल पर जो अज़ीम बशारत दी है उसके पेशे नज़र ख़ैरुलकुरून अब तक फज़ीलत व सवाब की तहसील और सआदते दारैन के हुसूल की खातिर उलमाए उम्मत ने न सिर्फ अरबईन अहादीस का तहफ्फुज़ किया. बल्कि ज़बानी या तहरीरी तरीक़ा से उनहें दूसरों तक पहुँचाने का भी खूबसूरत इहतिमाम फरमाया है.

अरबईन नवेसी' उलूमे हदीस की इल्मी दिलचस्पियों का एक मुस्तक़िल बाब हे तज़करा निगारों की रिवायात और मुअर्रेखीन हदीस की तफसीलात के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ी अल्लाहो अन्हो पहले मुहद्दिस हैं जिनहोंने इस फन पर पहली अरबईन मुरत्तब करने की सआदत हासिल की. बाद अज़ाँ इल्मे हदीस. हिफाज़ते हदीस. और हिफ्ज़े हदीस की इल्मी और अमली तरगीबात ने अरबईन नवेसी को एक मुस्तक़िल शोअ़बा हदीस बना दिया. इस ज़िम्न में की जाने वाली कोशिशों के नतीजे में अरबईन के सैकड़ों मजमूए उसूले दीन. इबादात.

आदाबे ज़िन्दगी. ज़ोहदो तक़्वा और खुतबात व जिहाद जैसे मौजूआत पर मुरत्तब होते रहे. उनमें से सत्तर मजमूओं का तज़करा सिर्फ "कशफुज़्ज़ुनून" में मिलता है.

बर्रे सगीर में भी अरबईन नवेसी का ज़ौक़ रहा और इस ज़िम्न में शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरैलवी तक बहुत से मजमूए हमारे सामने हैं. अरबईनात की फेहरिस्त में "अरबईने नौवी सबसे मुमताज़. मोअ़तबर और नुमायाँ काम है. जिसमें इमाम नौवी अलैहिर्रहमा ने मुतक़द्देमीन उलमा के बिखरे मक़ासिद को यकजा फरमादिया है यानी ऐसी हदीसों का इन्तेखाब फरमाया जो दीन व शरीअत की बुनियाद व उसूल भी हैं और आमाल व अख्लाक़ और तक़्वा व तहारत की असास भी. और फिर कमाल यह कि उनहोंने सेहत का भरपूर इलतेज़ाम फरमाया है बल्कि अक्सर अहादीस. सहीहैन से माखूज़ हैं

तो अस्लाफे उम्मत के नक़्शे क़दम की इत्तेबा और फज़ीलत व सआदते दारैन के हुसूल की हिर्स में हमने भी एक नए अन्दाज़ से इस मौजू को निभाने की कोशिश की है. और इन्तेखाबे अहादीस के लिये सहाहे सित्ता ही को मदार बनाया है. उम्मीद है कि हमारी यह काविश ब निगाहे तहसीन देखी जाएगी. وَ مَا ذٰلِکَ عَلَی اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ

मुहम्मद अफरोज़ कादरी चिरैयाकोटी
दल्लास यूनिवर सिटी कैपटाउन साउथ अफ्रीका